



## पञ्चाल्याल चाकलीवाल

महामंत्री—भारतीयजीनमिदोनप्रकाशिनी तंभ्या,  
१. विरक्तंय देन, मापवाजार, कलकत्ता ।



मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ,

अनसिदातपकाशक पवित्र प्रेम

१ विलोप्य देन. गो. मापवाजार—कलकत्ता ।





श्रीभीष्मस्य नमः ।

स्वर्गीय कविवर पंडित श्रीमद्-रामचंद्रजी विरचित

श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजाविधान ।

मंगलाचरण .

तोदा ।

सिधिविदायक कर्मजित, भरमहरन भयभंज ।  
चोवीसो जिन लो मुझे, ज्ञान, नमूं पदकंज ॥ १ ॥

अष्टि

या संसारिमक्षारि असातातस हं,

स्वामिन् ! आयो सरानि हरो दुख, भक्त हं ।

लगे निश्चिद तुम्ही भोगते नाथजी,

नमू नमू तुम पाय जोरि के हायजी ॥ १ ॥

तीर्यकरपद बंदि जिनापीसा नमू,

विभू नमू सुधमती नमू जिन दुख चमू ।

अकलंको नमि नमू महाबोधक सही,

केवलप्रोषक जिस्तु नमू महानंद हो ॥ २ ॥

मदानंद नमि नमू चिदानंद बुद्ध हो, विस्तु स्वयंप्रभनमूं चिदोत्तम सुर  
प्रसा इंदरर सुख धनंजयकूं नमूं, शंकर काम सुगत मवेश्वर ते रमूं

नमूं जिनोचग हरी कलाघर शुक्लही, जजूं उमापति चंद्र विघ्न चतुक्वही  
 वेदवित नमि नमूं वेद पारंगत तुही, कमलासन श्रीमानघुपभनमिहुसही  
 नमूं वृहस्पति अजित कर्मकरता जजूं द्वादस आतम सुद्ध करमहरता भजूं  
 नमूं केवलालोक स्वयंभू माघव । गातेमभूतं नमि नमूं अब्जभू साधव ॥  
 नमूं नमूं ईसान भूत वत्सल नमूं । स्वामी वासव नमूं अर्धनारी पमूं ॥ ५ ॥  
 जेष्ट नमूं श्रीकंठ आत्मभू ध्यायही, नमूं वेदकरतार निरंजन गायही ॥  
 समतागतकुं वंदि सुवागीसादिही, कोविदके नमि पाय नमूं अष्टादिही  
 नमूं निरंवर सांति निराकांखीतुही, निरारेक नमि नमूं निकल निर्मलसही  
 संसारापरवरजितके पद वंदिही, चेतन चैता वंदिधीर सुखकंदही ॥  
 वंदूं भैंचिद्रूप अकरता निर्गुणो, नमूं महोत्तम पाय मारजित सदगुणो

जितमतसर नमि नमं मिद्धि भगता सही नमं धर्म करतार धमचकी तुही  
 वीतराग नमिनमृ विदामान्यो सदा सुवर्मा भूतनमि नमं विघाताजी मुदा  
 नमं धानि जात निराहारक तुही म्याद्वाद विधिवेद अन्धयो सुभमही  
 मलमार परकासर तुम वाधाक्षही द्वेषभाण नमिनमं सुनय गुरुमाविही  
 प अट्टेनचार्गीस जयानेना सही तुही सुनय ममार विधिवेधक सही ॥  
 नमृ रमृ एकांतमता सनेतही नमृ निरस्ना पापममुच्चय ये मही ॥  
 प अप्यात्तर नाम अमल गुण त भग चतुर्वीम तीर्थेस पूजि लस्त्रिके घरे  
 सने अष्टोत्तर नाम कंठ पं बुधघरे महा सुष्ट सुधार नरोत्तम दबरे  
 नर सुरके सुख भोगि चकूचति यायही निद बधूवर होइ सदा सुखपाय ही

दोहा—जे नर पढे त्रिकालही संपति राज्य महान  
 रामचंद्र लिन सम लहे पावे मोछि निदान ॥ १७ ॥

हरिप्रसाद ज्ञि सिद्धेय ।

( इति मन्त्रेण सकलं ॥ १७ ॥ )

संमुख्य चौबीस तीर्थकरकी पूजा,

आदिछ ।

चुपभ आदि अतिथीर चतुर्विंशति जिना ;  
ध्यान सहग गहि हते कर्म वंसु दुर्जना ।  
वसुगुणजुत वसुधरा ठये भव छारिके ,

आह्वानन विधि करूं गुणैष उचारिके ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ह्यमादिचतुर्विंशतिजिनाः । अन्नाद्यतरत प्रयतत संश्लेष ।

ॐ ह्रीं ह्यमादिचतुर्विंशतिजिनाः । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ओं ह्रीं ह्यमादिचतुर्विंशतिजिनाः । अत्र मय सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

गीता छंद

कर्पूरवासित सरद ससि सम धवल द्वार तुषारतै ।





धवल सांलि अखंड डिंडी, पिंडना मुक्ता जिसी ॥  
 नृप भोग जोग मनोग्य चितहर, गंधतें मधुकर खुसी ॥  
 पद अखे कारन क्षालि जलतें, उभे करमें लेयही ।  
 चउवीस जिन नृपमादिके, पद जजूं गुण गण धेयही ॥ ३ ॥  
 ओं श्री श्रीगुणमास्त्रिगीतेश्वरोऽक्षयपरमाशये अथगान् निर्वापीति स्वाहा ॥  
 विमल गंध सुगंध कृत दिग्, कुसम वर्न सुहावने ।  
 ललचाय लोचन प्राणहारी, मधुप कौरलिया वने ॥  
 सो समरवाण विध्वंसकारण, अमर तरुके लेय ही ।  
 चउवीस जिन नृपमादिके, पद जजूं गुणगण धेय ही ॥ ४ ॥  
 ओं श्री श्रीगुणमास्त्रिगीतेश्वरः कामयागविध्वंसनाय पुद्गाणि निर्वापीति स्वाहा ।  
 सुरधि धीव सुगंधतें, पकवान बहु विधि कीजिये ।  
 रस खंड जु दे करि सुवर्न भाजन सद्य मनहर लीजिये ॥



ओं ह्रीं श्रीवृषभादित्रीरतिभ्योऽष्टकर्मदहनाय ध्रुवं निर्वाणमीति स्वाहा ॥  
 फल मनोहर पद्म मधुरे, सुर्नधे रलिया नैन ।  
 ललचाय लोचन घ्रान रंजन, रसनकुं प्रिय पावनें ॥  
 भरि थाल कनकमय अमर तरुके, उमै करमें लेय ही ।  
 चउवीस जिन नृपभादिके, पद जजूं गुणगण धेयही ॥ ८ ॥  
 ओं ह्रीं श्रीवृषभादित्रीरतिभ्यो मोक्षफलमाप्तये फलं निर्वाणमीति स्वाहा ॥  
 नीर गंध हल्यादि ले पद, चतुर्विंशति जिनतनै ।  
 जो जजै ध्यावै बंदि सतवै, ठानि उरसव अति घनै ॥  
 सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थपदकी श्रेयही ।  
 सुख 'रामचंद' लहंत सिकके, अर्धकरि प्रभु धेयही ॥ ९ ॥  
 ओं ह्रीं श्रीवृषभादित्रीरतिभ्योऽनर्घपद्मप्राप्तये अर्घं निर्वाणमीति स्वाहा ।

अष्टित ।

वचन सुधासम भाषि सवै जन तोपिया, नृपपदमें धनधान देय बहु



पुनः सुरगिरि मनपन ठानि, नृपमनाथ पूजु धार ध्यान ॥ २ ॥  
श्री श्री नन्दनरथां तन्मन्त्रमन्त्रिणां श्रीमादिनागजिनेन्द्राय नमः

य श्रीगिरि २००० ।

मन मून नृप निय कन्यादोय । तजि उपाधि सत्र मुनिवर होय ।  
॥ १ ॥

॥ २ ॥ मन धन्या नो येन अयेन । पूजे में पूजुं भिवहेन ॥ ३ ॥  
श्री श्री नन्दनरथां तन्मन्त्रमन्त्रिणां श्रीमादिनागजिनेन्द्राय नमः

य श्रीगिरि २००० ।

कागुन अभित इकादभि ज्ञान, उगड्यो धर्म कल्लो भगवान ।  
ननुर निकाय देव नर नारि, पूजे में पूजुं भव तारि ॥ ४ ॥

श्री श्री नन्दनरथां तन्मन्त्रमन्त्रिणां श्रीमादिनागजिनेन्द्राय नमः

॥ ५ ॥ अभित चोदसि विधिमेन, हने मोक्ष पायी सिवदेन ।  
सुर नर मय केन्नाम मुथान, पूजे में पूजुं धरि ध्यान ॥ ५ ॥

श्री श्री नन्दनरथां तन्मन्त्रमन्त्रिणां श्रीमादिनागजिनेन्द्राय नमः

॥ ३८ ॥

आदि जिनेश्वर आदि लङ्घि केवलमई ।

समोसरन धनदेव रन्धो को वरनई ॥

छादस जोजन ठीक महा सोभा घरे ।

बीस सहस सोपान सुरासुर जे करै ॥

पञ्चरि घंर ।

जय धूप माल पण रतन चूर, दिग मानसयंभ उद्योत सूर ॥

चउ बापी मणि अंबुज सुदाय, लखि मानीको मद भंग धाय ॥ १ ॥

जय गगई मणि नीरज मराल, वन रत्नलता बहु कुसुम जाल ।

प्राकार रतनमय तेज भान, चउ गोपुर प्राति द्वे घूप दान ॥ २ ॥

मत मत तोरण द्वे नाट साल, सुरानिय गावे जिनगुण विनाल ॥

वन सुरतरु पैल अनांक आम, पुन वरन वरन वन सर्वनाम ॥ ३ ॥

चापीकर नेदी चव दुवार, नन ज्यारि केरि शोभा अपार ॥  
 कलपोन पार दूजो उंग, चव गोपुर पूरव उत सुचंग ॥ ४ ॥  
 चड ननदी नन चार चार, कहुं नंदी परवत गेह सार ॥  
 मिल्ह मय द्रुम मनहर गरूप, जिन विवांक्ति बहु पुनि सरूप ॥ ५ ॥  
 कहुं लना भवन गावे कल्यान, बहु वाजे चीन मृदंगतान  
 नाचिं किनर गंधर्व गीत, जिनगुण गावे अपहर संगीत ॥ ६ ॥  
 मय दारपाल कर गदाझू, कर जोरि चलें मुर खनर भूप ॥  
 फिरि कटिक कोट सोभा अमान, चउ गोपुर भंगल द्रव्य जान ॥ ७ ॥  
 माधि सभा चनी दादस अनूप, मित चंद्रकांति मणिको सुतूप ॥  
 जय गंधकुटी आमोद सार, धुज सिमर कलस उद्योतकार ॥ ८ ॥  
 जय आदि पीठ पोडस मिवान, मनु पोडस भावनके निधान ॥  
 जय दुनिय पीठ वसु गुण चढाय, जय त्रितिय पीठ वसु भव लसाय ॥



जय मिषपीठ परि कंचल सार, जिन अंतरीक आनन सु न्यार ॥  
 जय भाभंडल छावि कोटि भान, अरु छत्र तीनतें ससि लजान ॥ १० ॥  
 जय तरु अशोकतें शोक दर, जखि चवर करै चउसठि हजूर ॥  
 हे भागधि भाषा कोस न्यार, सुर पुण्यवृष्टि शोभा अपार ॥ ११ ॥  
 नभ दुंदभि घाजें अति गभीर, अघ द्वादस कोटिन शब्द भीर ॥  
 सुर असुर करै जय नंद नंद, चाले समीर अति मंद मंद ॥ १२ ॥  
 जय देव अनंत चतुष्ट पार, दरसन सुख चौरज ज्ञान सार ।  
 जय तीन काल दिव प्वनी होय, सुनि समाक्षि जाय दस प्रान सोय ॥  
 भु दर्पण मम कंटक न कोय, षट ऋतु फल फल सुगंध होय ॥  
 जन्माविरोध प्राणी न रोष, पद कमल रचै जाखि सर्व तोष ॥ १४ ॥  
 प्रभु गुण अनंत भाषे न जांय, मे अत्य बुद्धि सुगुरु य हाय ॥  
 मे अरज करूं करि धारि सीस, मुझ तारि तारि भवतें जगसि ॥ १५ ॥

पूजा ।

दृढ त्रिनगुण सारं, अमरु अपारं, जो भवि जन कंठे धरई ।  
 हनि जर परणासक्ति, नाभि भयावलि, 'रामचंद्र' जिवितिय चरई ॥  
 ओ ह्रीं श्रीमादिनाथत्रिनेंद्राय सनमः परमेश्वरभवे चये निर्भयमीति स्वाहा ।

रवि श्रीमादिनाथ त्रिगुण सगल ।

## अथ श्रीअजितनाथजीकी पूजा ।

प्रथम ।

सकल कर्म हनि अजित त्रिनं भिन्न खेतमं ।

गिरि समेदतं गये तिनोके हेत मं ॥

आह्वानन मंस्यापन अरु सनधि करूं ।

मन वच तन करि सुद्धचार त्रय उचारूं ॥ १॥

ओ ह्रीं श्रीमादिनाथत्रिनेंद्र । नमः । अथार अथार मंगीपद । श्री ह्रीं श्रीअजितनाथ

जिनेन्द्र ! तब किणु निष्ठ । ठः वः ओ गौ श्रीमजिनाथ जिनेन्द्र ! अथ यथ सक्तिदिओ  
यथ भव वरद ।

विभ्रंजीछंर ।

गंगा समनीरं, प्रासुरुमीरं, कनकरतनमय भृंग भरो ।  
जर मरन पिपातं, हरि सय त्रासे, मन वच तन त्रय धारकरो ॥  
श्रीअलितजिनेस्वर, पुहमिनरेस्वर, सुरनरखगवंदित चरणं ।  
मे पूजुं प्याऊं, गुण गण गाऊं, सोस नवाऊं अघहरनं ॥ ?  
ओ ती श्रीअत्रिपद, यथपदजिनेन्द्राप अममृत्यु, निनागनाथ ब्रह्म नि० साहा ।  
मल्लिपागर ल्यावै, अगर मिलवै, केसरयुत धनसार घसै ।  
भयताप निशान, निव सुम्य कारन पूलि जिनेश्वर पाप नसै ॥ श्रीअ०  
ओ ती श्रीअत्रिपदमयजिनेन्द्राप संतानाथविनायकाथ चंद्रवं नि० साहा ।  
तंदुल सु अंखंडित, मोरभिमंडित, मुक्कामम जिनपद आगे ।  
करि पुंनपिपासी भव अमरासी लहे अक्षैपद भय भागे ॥ श्रीअ०

ओं श्री श्रीगजितनागजिनेन्द्राय भक्त्यपदमस्तुने अशतान् निर्वाणमीति स्वाहा ।

देवत ही सेहि सब मन मोहि कुमुद कनकगय रतन जड़ा ।  
 मुर नर पशु सारे क्काम विदारे पूजत वाण मनोज उड़ा ॥  
 श्रीअजित जिनेश्वर पुहभि नरेश्वर सुर नर खग वंदित चरनं  
 भें पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अधहरनं ॥ ४ ॥

ओं श्री श्रीगजितनागभगवजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पूष्यं निर्वाणमीति स्वाहा ।

अति मिष्ट मनोहर घेवर गूजा फेंनी मोदक थाल भरूं ।  
 बह्नु छुधा सतायो पूजन आयो हरो वेदना अरज करूं ॥  
 श्रीअजित जिनेश्वर पुहभि नरेश्वर सुर नर खग वंदित चरनं ।  
 भें पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अधहरनं ॥ ५ ॥

ओं श्री श्रीगजितनागभगवजिनेन्द्राय क्षुमारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वाणमीति स्वाहा ।  
 धरि कनकरुघी. रतनसुदीपक. जोति ललितकरि प्रभुओंगे ।



मं पूजं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अधहरनं ॥ ८ ॥  
 ओं ह्रीं श्रीभक्तिनाथमगजजिह्वेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फले निर्धिपामीति स्वाहा ।

मुमु निरमल नीरं गंधगदीरं तंदुल पटुप सु चरुल्योवै ।  
 फुनि दीपं धूपं फलसु अनूपं अरघ “राम” करि गुण गोवै ॥  
 श्री आजित जिनेसुर पुष्टिनिरेसुर सुरनरखग चंद्रितचरनं ।  
 मं पूजं ध्याऊं गुण गण गाऊं भीम नवाऊं अधहरनं ॥ ९ ॥  
 ओं ह्रीं श्रीभक्तिनाथमगजजिह्वेन्द्राय अनर्घरत्नप्राप्तये अर्घे निर्धिपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ्य ।

दोहा ।

विजै विमानधत्री चये, विजया गर्भमक्षार ।  
 जेठ अमावसि अवतरे, जजूं भवार्णवतार ॥ १ ॥

ओं नै ज्येष्ठकृष्णमाधस्यासं गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः  
निर्वाप्तीति स्वाहा ।

माध सुकुल दसमी सुरा, जन्म जिनेस निहार ।

सुर गिरि सनपन करि जले, में पूजूं पदसार ॥ २ ॥

ओं नै माधशुद्धद्वयां जन्मद्वयासुरिनाथ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः  
निर्वैवाप्तीति स्वाहा ।

माध सुकुल दसमी धरथो. तप वनमें जिनराय ।

सुर नर खग पूजा करी. हम पूजें गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माधशुद्धद्वयां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः  
निर्वैवाप्तीति स्वाहा ।

पोह सुकुल एकादसी, केवलज्ञान उपाय ।

कहो धर्म पदसुग जले, गहामक्ति उर लाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं गौणगुणैकैकादश्यां ज्ञानकल्याणवंदिनाय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं  
निर्वणधीनि स्वाहा ।

चेत सुकल पंचमि विषे, अष्ट कर्म दानि मोख ।

अजित समेदाचल थकी, गण जिजुं गुण घोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैशुक्लपंचम्यां गोक्षमंगलवंदिनाय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय महाधर्म निर्धि-  
यामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला.

गोहा ।

मकल तत्त्व ज्ञायक सुधी, गुण पूरन भगवान ।

धरम धुरंधर परम गुरु, नमू नमू धरि ध्यान ॥ १ ॥

पञ्चद्वी ध्वज ।

जय जय श्रीअजित जिनेस देव, तुम चरन करूं दिनैरेन सेव ॥





मुम कोट दिवें जिम तेज भान. नृतसालाभे गावें कल्याण ।  
 पान वन मोभा वरनी न जाय. राजत वेदी बहु धुज उडाय ॥ ७ ॥  
 फिरि कोट हेममय सुघरसार. बहु कलहट्टम वन सोभकार ।  
 नव रतनरागि सोभित उत्तंग, ऊंचे मंदिर जहं बहु सुरंग ॥ ८ ॥  
 फिरि फटेक कोट सोभा अमान, मंगल द्रव्यादिक धूप दान ।  
 माधि ह्वात्तम वनिय सभा अनूय, मुनि सुरनर पशु बैठे सुभूय ॥ ९ ॥  
 विनि तीन रतनमय तुंग पीठ, वेदी सिंहासन कमल हूठ ।  
 जिन अंतरीक आनैन सुचार, धर्मोपदेश दे भव्यतार ॥ १० ॥  
 भित छत्र तीन उद्योतकार, तरुहे अशोक जन शोक टार ।  
 गंधाद विष्ट जुन पुष्प विष्ट, नभि हुंदुभि वाजै मिष्ट मिष्ट ॥

अति धवल नगर बोलत दुराय, भामंडल छवि वरनीन जाय ।  
पंथ विभूति जिनराज देव, नमि नमि फुनि फुनि कहों जु सेव । १२ ।

सला ।

श्री अजित जिनसुर, नमत सुरसुर, पूजे संचरगण चरण ।  
नरपति बहु ध्याये, सित पद पावे ' रामचंद्र ' भवमयहरणं ॥ १३ ॥

श्री श्री श्रीप्रविशनाथविन्द्याय पूजार्थे निर्दयमीति स्मरण ।

इति श्री अमृतनाथजीकी पूजा संपूर्ण ।

अथ श्रीसंभवनाथपूजा ।

स्तो ।

संभर राम हने सचे, सित समेदते पाय ।  
आहरानन त्यापन करूं, मम सनिहनि भव आए ॥ १ ॥  
ओ गो मे सुंभरनाथविन्द अनाम भवन् । मुंभीष्ट । ओ श्री भोंडंभरनाथ-

विन्द्याय नमः ॥

मि० ३ । अथ सिद्धि तिष्ठतः ८ः । ओं श्रीशृंगधनामजिनेन्द्र । अथ प्रथम मन्त्रि-  
द्वितो भव भव । वषट् ।

प्रितंगी छंदः ।

मं नृपा गतागो, अति दुःख पायो, जल लायो प्रभु तुम आगे ।  
भक्तिं कंचन द्वारी, धार उतारी, जन्म मृती तनछिन भागे ॥  
मं भव भव तोरयो, मोह मरोस्त्रो, जोरयो आनमसो नैदा ।  
हं पूजुं ध्यातुं, सीस नवांचुं तारि तारि विलस जु केहा ॥ १ ॥

ओं श्रीशृंगधनाममवज्जिनेन्द्राय नमः मृत्युविनाशनाथ जलं निर्वा-  
पायि स्वाहा । जलं ।

भव ताप सतायो, तुम ढिग आयो, चंदन लयायो अति सीरा ।  
हो सिद्ध निरंजन, भवभयभंजन, तुम पूजुं हरि भवपीरा ॥

१ मरण । २ भीति । ३ मृत्यु टपा । ४ कुल ।

भेभर भव तोरघो. मोह मरोरघो जोरघो आनममो नेहा ।

हृपुनु प्थानू. भीम नत्राचूं सारि तारि विरम जु केहा ॥

शो ही अथवनःपथनप्रतिनेहाय संनातावनिताएनाय पंने विरमदीति आता ।

भव वाम वोररा. तोरो भेरा. भे चेरा तुम गुण गावूं ।

तदुल सुअग्रंदिह. मौरभि भंडित. पून कलं शिव पद पावूं ॥

भभ भव तोरघो. मोह मरोरघो जोरघो आनममो नेहा ।

हृपुनु प्थानू भीम नत्राचूं तारि तारि विरम जु केहा ॥ ३ ॥

अ ॥ श्री अथवनःपथनप्रतिनेहाय संनातावनिताएनाय पंने विरमदीति आता ।

यो काम महायल. वभि करि लोनो हरि हर प्रधिके मव सारे ।

भे पूनन आयो. पासुक लायो. कुमुम मदनसर हरि प्यारे ॥ संभव ० ।

शो ही अथवनःपथनप्रतिनेहाय संनातावनिताएनाय पंने विरमदीति आता ।

यह लुधगा हत्यारी अति दुखकारी मोहि सतावत है ताँते ।

वर मोदक लगायो पूजन आयो, हरो वेदना प्रभु याँते ॥

संभव भव तोरयो मोह मरोरयो जोरयो आतमसों नेहा । ।

हं पूजूं ध्यावूं सीस नवावूं तार तार विलप जु केहा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथगवजिनेन्द्राय चुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह महातम छाया रह्यो मम ज्ञान हन्यौ अति दुख दीनो ।

मति दीपन लयाओ. ध्यान नसायो पूजत पद चेतन चीनो ॥ संभव०

श्रीसंभवनाथगवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दृष्टजकर्म वडे अधर्म दुख देवें कवलौ गावें ।

कुम्भनाग धूपं मलय अनूपं पद खेवें लहु जरि जारें ॥ संभव भव० ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्ष महा मग रोक रह्यो, अंतराय कर्मवल मो रोधा ।

फल प्रासुक लावूं तोहि चढावूं मोक्ष मिलावो हो बोधा ॥ संभव०

ओ दी श्रीमंभवनाचञ्चिनेन्द्राय मोधरुग्मातरे निर्देगमीति फलं स्वारा ।

निर्मल नीरं, गंध गहीरं, तंदुल पुष्पं चरु लायो ।

मणिदापं पूरं फल सु अनू अरघ "रामचंद" करि गायो ॥ सं०

ओ दी श्रीमंभवनाचञ्चिनेन्द्रायाम्प्रादयदमातरे अर्यं निर्देगमीति स्वारा ।

अथ पंच कल्याण अर्घ ।

दोहा ।

फाल्गुण सुदि अष्टमि चये नव ग्रीवकतै इंद ।

सेनादे उर अवतरे जंजू धर्मकै कंद ॥ १ ॥

ओ दी सत्गुणदुर्वाष्टम्यां गर्भसत्त्वान्मरुतावाग श्रीमंभवनाचञ्चिनेन्द्राय परार्थे ॥ १ ॥

कातिक सुदि पुनिम सुरा संभव सुर गिरि लेय ।

जन्म महोत्सव करि जजे हृष्ट पृजे गुण ध्येय ॥ २ ॥

ओ दी श्रीगार्गिकपूर्णपार्या जन्मपंचमंडिताय संपन्ननाचञ्चिनेन्द्राय परार्थे निर्वेपाकीति०

चाथ अपित कार्तिकविषं ध्यान खड्ग गहि वीर ।

आ हा कार्त्तिकध्यानतुर्थो ज्ञानमंगलपङ्क्तिनाथ श्रीसंगवनाथजिनेन्द्राय नमः ॥ ३ ॥

चेन मुकल पष्ठमि विणे शेष करम निरवार ।

मा हा चैत्रनुव्यगुणचा मोक्षरामनपङ्क्तिनाथ श्रीसंगवनाथजिनेन्द्राय नमः ॥ ४ ॥

मोक्षरामनपनि भये जजुं गुणोद्य उचार ॥ ५ ॥

अथ जयमाल ।

दोहा-संभव निज संभव हरयो मो संभव हरि नाथ ।

करुं वीनती सुमरि गुण नमूं सीस घरि हाथ ॥ १ ॥



कालतूर्य गयो पौण सेप रह्यो पावही, उपजे संभचनाथ जगतकें रावही ।  
माता सेनादेवि जितारि पिता नमूं, सावंती भवथान पूजि अधकूं वमूं ॥  
धनुष चारसौ तुंग कनकदपु सोहनो,

सठि लख पूरव आयु अश्व चिह्न मेहनो ।

वंश हृक्ष्वाकुसिंगार पूर्व लख तप कियो,

घाति कर्म चउजारि ज्ञान केवल लियो ॥ ३ ॥

समोसरन धनदेव रन्धौ शोभा घनी,

ग्यारा योजन बीच एक सतपन गनी ।

बीच मक्षत्रय पीठ कपल पर जिन लसे,

अंतरीक मुख चार छत्र ससिहुं हंसे ॥ ४ ॥

चौसठि चंवर जखेश करें अतिही छजे,

साढा द्वादस कोडि जाति दुंदभि वजै ।

दिव्य धुनि करि भवि नारे भवतै नाथजी,

मोकुं भवतै तारि देव । गहि हाथजी ॥ ५ ॥

इहमंसार मझारि महादुःख मै सहू, तुमते छाने नाहि कहा मुखतै कहू ।  
 यतै कारज मोहि सरे तुमते सही, औरनतै कहा काज सरनि तेरी गही ॥  
 तेरो नाम अपार उदधि नवका भली, तेरो नाम उचारि होहि सबही रली  
 तेरो नाम जपंत उरग ह्वै माल ही, तेरो नाम जपंत सिंध ह्वै स्थाल ही ॥  
 तेरो नाम जपंत रोग सबही टरै, तेरो नाम जपंत रिद्धि घरमै भरै ।  
 तेरो नाम जपंत ज्वाल जल पेखिये, तेरो नाम जपंत दुरद मृग देखिये

तेरे नाम पसाय श्वान सुर थाययो,

मो मन मै तुम नाम भलीविधि आययो ।

तो अव चिंता कौन मोछि पद पायस्यौ,

सुर पदकी कहा बात भृती ह्वै चायस्यौ ॥ ९ ॥

येष्ट ।

संभव जिनकी युति इहे जो पढिसी मनलाय ।  
 “रामचंद” सुख शिव भले पावै सहज सुभाय ॥  
 ओं नमो श्रीसंभवाय त्रिलोकाय नमो नमो नमो ॥

इति श्रीसंभवाय पूजा समाप्त ।

अथ श्रीअभिनंदननाथपूजा ।

अभिष्ट ।

घाति हने लहि ज्ञान योधि भवगिरि ठये ।  
 हनि अघाति अभिनंद सिवालै यिर भये ।  
 आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उमरूं,  
 संवौपट ठः ठः वषट् त्रियविध करूं ॥ १ ॥

श्री ॥ श्रीअभिनेन्दन जिनेन्द्र ! अथ तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।  
श्री ॥ श्रीअभिनेन्दन जिनेन्द्र ! अथ गण सन्निहितो भव भव । वषट् ।

विमंगी चंद्र ।

उत्तम जल प्रासुक, अमल सुवासित, गंगादिक हिम तटहारी ।  
तुम पूजन आयो, अति सुख पायो, हरा जनम मृति दुखकारी ॥  
अभिनेन्दन स्वामी, अंतरजामी, अरज सुनो अति दुख पाऊं ॥  
भव वाम वमेरा, हरि प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाऊं ॥ १ ॥

श्री ॥ श्रीअभिनेन्दन जिनेन्द्र ! अथ जन्ममृत्युविनाशनाथ जलं नि० ।  
शुभ कुंकुम ल्यावै, चंदन मिलावै, अगर मेलि घनसार घसे ।

श्री ॥ जिनवरआगे, पूज रचावै मोहताप तत-काल नसे ॥ अभि० ॥  
श्री ॥ श्रीअभिनेन्दन जिनेन्द्र ! अथ संसारतापविनाशनाथ चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मुक्तामम तंदुल, अमल अखंडित चंद किरन सप भरि थारी ।  
करि पुंज मनोहर, जिन पद आगें लहों अखै पद सुखकारी ॥ अभि० ॥

ओं ह्रीं श्रीअमिनंदनजिनेन्द्राय अथपदप्रणये अध्वान् निर्वणमीति स्वाहा ॥

भंदार जु सुंदर, कुसुम सुल्पावें, गंध लुब्ध मधुकर आवैं ।  
जिनवर पद आगें, पूज रचावैं समरवान नसिकें जावैं ॥ अभि० ॥

ओं ह्रीं श्रीअमिनंदनजिनेन्द्राय कामयागविश्वसनाय पुष्टं निर्णामीति स्वाहा ।

नानाविध चरुलै मिष्ट मनोहर, कनकथाल भरि तुम आगें ।  
पूजन कूं ल्हायौ, अति सुख पायो, रोग छुवादि सबै भागें ॥ अभि० ॥

ओं ह्रीं अमिमंदनजिनेन्द्राय तुषारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्णामीति स्वाहा ।

मुक्ष मोह सतायो अति दुख पायो ज्ञान हस्यो करिकै जोरा ।  
मणि दीप उजारा तुम ढिग धारा हरो तिमिर प्रभुजी मोरा ॥ अभि०

ओं ह्रीं श्रीअमिनंदनजिनेन्द्राय मोहावकारविनाशनाय दीपं निर्णामीति स्वाहा ॥

स्वेये अभयारि मलत्ते, अंगर मिलौवे, भरि घूगंयन प्रभु ओंगे ।

भो ही श्री अमिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्धामीति स्वाहा ॥  
फल उत्तम ल्यावे, प्रासुक मोहन गंध सुगंध रसवारे ।

श्री ही श्री अमिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्धामीति स्वाहा ॥  
करि अर्घ्य महाजल, गंध सु लेकरि, तंदुल पुष्प सु चरु भेवा ।

श्री ही श्री अमिनन्दनजिनेन्द्राय महार्घं निर्धामीति स्वाहा ॥  
भाणि दीप सु धूप, फल जु अनूपं 'रामचंद' फल सिवसेवा ॥ अभिन०

पंच कल्याणक अर्घ्य ।

दोहा-अष्टमि सित वैसाख तजि, विजय विमान सुरिंद ।  
अवतरि गर्भ सिधारथा, लयो जजूं गुण वंद ॥ १॥

ओं ह्रीं वैशाखगुप्तद्वार्या गन्धर्वलम्बिनाय श्रीअभिन्दनजिनेन्द्राय अर्थ निर्विपा०  
जन्म माघ सुदि द्वादसी, सुरपति लखि हत आय ।

सनपन करि सुर गिरि जिजे, हम जजि हें गुण गाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं वायगुप्तद्वार्या नन्दमंगलम्बिनाय श्रीअभिन्दनजिनेन्द्राय परार्थ नि०

इवेत माघ द्वादसि दिना, अभिन्दन धरि धीर ।

जगतराज नृनवत तज्यो, जजुं चरन शिवसीर ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघगुप्तद्वार्या नपोभूषणभूषिताय श्रीअभिन्दनजिनेन्द्राय अर्थ नि० ।

पौष सुकल चउदसि हने, घाति करम जिनदेव ।

कल्यौ धर्म केवलि भये, जजुं चरण जुग एव ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषगुप्तद्वार्या ज्ञानचरणम्बिनाय श्रीअभिन्दनजिनेन्द्राय अर्थ निर्वि० ।

सित पष्टमि वैशाख सिव, गये सेग हनि कर्म ।

जजुं चरनजुग अक्ति करि, देहु देव निज धर्म ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखगुप्तद्वार्या मोक्षरुपाणम्बिनाय श्रीअभिन्दननाथजिनेन्द्राय अर्थ निर्वि० ।

अथ जयमाला ।

श्लो० ।

अभिनंदन आनंदके, दाता जगत विख्यात ।  
वत्सल नमन त्रिविधा मदा, मुक्ष आनंद करि तात ॥ १ ॥

पञ्चम स्तव ।

जय अभिनंदन आनंद कंद । जय तात स्वयंवर धर्मवृंद ॥  
जय देवि मिथारथा उदर सार । अवतार अजोऽध्यापुरमझार ॥  
वपु कनक चाप त्रियमै पचास । दक्षकुन्त्योपमधि रविउजाम ॥  
प्रभु पुरव आय पचास लक्ष्य, तप धारि हने चउघाति अक्षय ॥  
कवल उरमव मुर असुर आय, जय शब्द ठानि कीन्हो अघाय ॥  
ममवादि भूनि अदभुत अपार, रवि भुनि आरंभी दंडमार ॥ ४ ॥  
रसना सहस करिकें भनंत, तव पार लहै नहि गुण अनंत ।



मैं अल्प पुदि किम करुं यखान, तुम भक्ति जु भरेयो देव आन ।  
 जय तीन जगत पाति के सुनाय, सुर गुरु नमूं में जोरि हाथ ।  
 जगस्वामिन के तुम स्वामि देव, जगपूजयनिके तुम पूज्य एव  
 तुम हातौं भे संवह ईश, तपमिनमें तुम तरसी गिरीस ॥  
 तुम जोगिनमें जोगी महंत, हो परम जिनेसुर जिन कहंत ॥ ७॥  
 जय विश्व उधारन दुख निवार, निरबांछिदितु जगके अघार ।  
 जय उभे श्रीराजित अपार, निग्रंथ महा भुविके मझार ॥ ८ ॥  
 जय सची आदि करि सेव्य पांय, स्त्रंबूं महान ब्रह्मचारणाय ।  
 तुम सकल द्रव्य परजय लखान, जुगपतहि ब्रह्म निर्मुक्ति ज्ञान  
 तुम दरसन रविहरि तम अज्ञान, जुत पाप नभे प्रगटे कल्यान ।  
 हूं नमूं चरन जुग जोरि पान, गुगसिंधु सरन तुम नाहि आन ॥  
 हूं धन्य भयो तुम निकट आय, मोर्जातवधनि तुम चरन पाय ।

तुम धन्यनाथ किरपानिधान, “चंद्राम” कहें दे मुक्तिथान ॥०

मत्ता ।

दृढ थुति अभिनंदन, पाप निकंदन, जो भवि गावैं सुरघरई ।  
ह्वे दिवि अमरसुर, पुढभि नरसुर, लहु पावह शिवसुखनरई ॥  
ओं ह्रीं अभिनंदनजिन्दाय पूर्णार्थि निर्वापमीति स्वाहा ॥

इति श्री अभिनंदनजिनपूजा समाप्ता ॥

अथ श्रीसुमतिनाथजिनपूजा ।

अष्टिह ।

संवौषट् ठः ठः वषट् त्रिविधा करूं,  
आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उच्चरूं ।  
सुमति जिनेस्वर पाय जजनके काजही,  
गिरि समेद कल्याणक मोछ विराजही ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

५११११ गुप्तित्तन धधगरज्जिमेइ ! नन निष्ठ निष्ठ ठः ।

श्री । गुनतिनापमणरक्षिणम् नमः सर्वपातौ भव भव वः ।

अति सुन्दर उत्तम नीर प्रासुरु, मिश्र गंध मिलायये ।  
भगि देम हारी पूजि जिनपद, जनम मरन नसायये ॥  
ध्यामुमति जिनवर सुमति द्यौ, मुक्ष पूजिहूं वसु भवही ।  
म अनन काल अकाल भटिचपो, बिना तेरी सेवही ॥ ३ ॥

ओ ६ म' पुर्बिन थलिनेशर रुःमुत्पुनिःपुनार वने निर्दिष्टा०

क. पू० मैसा अग० लेहर, घ० चंदन वावना ।

ज्ञिन पूजि भरिजन भाइमेती, मोह ताप नमाचना ॥ असमति० ॥

श्री श्री प्रमुखिन.पद्मिनेश्वर संसारजार्जितानुवाय चंद्रने त्रिभार्मीनि रणदा ।

तंदुल मुनिर्मल लेहु दीरघ, जानि मुक्ताफल गही ।

जिन चरण आँगें पुंज करिये, अखेपद पावै सही ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीगुणतिनाथजिनेन्द्राय अक्षय्यदमाप्ताये अक्षयान् निर्धयामीति स्वाहा ।

मण वरण कुसुम सुगंध प्रासुक, अमर तरुंकं ल्यायये ।

जिनपद कमल आँगें चहोडे, मदन वाण नसायये ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीगुणतिनाथजिनेन्द्राय कामयागविध्वंसनाय सुखं निर्धयामीति स्वाहा ।

मरस मोदक मिष्ट घेवर, कनक थाल भराहये ।

जिन पूजि भव्य नैवेदि सेती, छुधा रोग नसाहये ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीगुणतिनाथजिनेन्द्राय क्षयरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्धयामीति स्वाहा ।

तेज मणिमय दीप सुंदर, करत तमको नासही ।

जिन पूजि भविजन भाव सेती, होय ज्ञान प्रकासही ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीगुणतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षांधकारविनाशनाय दीपं निर्धयामीति स्वाहा ।

पधूर किरागर मुचंदन, पूष दहन हुतासनं ।

परसेय भयि जिनचरण आगै, अष्ट कर्म बिनासनं ॥ श्रीसुमति ॥

श्री १० श्रीसुमतिनाथत्रिनेत्राय नमः सर्वस्वनाथ पूष निर्दिष्टमीति स्मारा ।

पादाम श्रीफल चारु पूंगी, मधुर मनहर द्वायये ।

पद यमलजिनके पूजिते ही, मोलिके फल पायये ॥ श्रीसुमति ॥ ९ ॥

भा १० श्रीसुमतिनाथत्रिनेत्राय नमः फल निर्दिष्टमीति स्मारा ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप ही ।

वर धूप फल अर्घ कजि, " रामचंद्र " अनूप ही ॥

श्रीसुमति जिनवर सुमति छौ मुझ, पुलि हूं वसुभेव ही ।

मैं अनंत काल अकाल भटिय्यो, गिना तेरी सेवही ॥ १० ॥

श्री ११ श्रीसुमतिनाथत्रिनेत्राय नमः सर्वस्वनाथ पूष निर्दिष्टमीति स्मारा ।

कपूरं किरनागर सुचंदन, धूप दहन हुतासनं ।

परस्त्रिय भवि जिनचरण आगौ, अष्ट कर्म विनासनं ॥ श्रीसुमति ॥

ओं श्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय षष्ठ्यर्चननाथ पूषं निर्बेधामीति स्वाहा ।

वादाग्र श्रीफल चारु पूंगी, मधुर मनहर तृणायये ।

पद् कमल जिनकै पूजिते र्धा, मोडिके फल पापये ॥ श्रीसुमति ॥ १॥

ओं श्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय षोडशकलाशये फलं निर्बेधामीति स्वाहा ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप ही ।

वर धूप फल लै अर्घ्य कीजै, " रामचंद्र " अनूप ही ॥

श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यौं सुहृद्, पूजि हूं वसुभेव ही ।

मैं अनंत काल अकाज भटिचर्यो, विना तेरी सेवही ॥ १० ॥

ओं श्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय वनस्पदपद्माक्षये धारयं निर्बेधामीति स्वाहा ।



ओं नमो वैभवायैकादश्या धामधूषणश्रीवाय श्रीसुमतिनाथाय नमः निर्वाणीति०  
 एकादश सित चैतकी, शेष करम दनि मोख ।  
 मिथर समेद धकी गये, जजुं चरण गुगघोख ॥ ५ ॥  
 ओं ही चैनसुखेंद्र ददशा मोसर लयाणभू पनाय श्रीसुमतिनाथाय नमः निर्वाणीति

अथ जयमाला ।

दोहा ।

सुमति सुमति दायक सदा, धायक कुमति कलेस ।  
 लायक सिव पद देनके, ज्ञायक लोक असेस ॥ १ ॥

पदही छंद ।

जय सुमति चरण दुति नख महान । जय करमभरमतमहरन भान ।  
 जय मेघपिता । चितपदम लाल । विकसावन कूं रवि प्रातकाल ॥ २ ॥  
 जय मात सुभंगला उदर सार । अवतार लपो जय ज्ञान धार ।





दो करुणानिधि जगपति अवार । सिव देहु असेँ सुखको भंडार ॥१॥

यत्ना ।

इह जिन गुणमाला, परम रसाला, 'रामचंद' जो कंठ धरे ।

हैं मिद निरंजन, भवभय भंजन, मोखरमा ततकाल वरे ॥

ओ दी भं सुमतिनाथजिनेंद्राथ यदार्थ निर्दयामीति स्महा ।

इति सुमतिनाथदेवपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीपद्मप्रभजिनपूजा ।

भक्ति ।

पद्म करम हनि केवल लै भवि वोधिषे ।

करे अघाति निरमूल सिखरते शिवगणे ॥

आह्वानन संस्थापन मम सनिहित करुं ।



अछित अखंडित दीरघ उज्जल, चंद्र किरन सम त्पावें ।

श्रीजिनवर पद पूजि मनोहर, तुरत अखें पद पावें ॥ पदम जिने० ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्ममज्जिनेन्द्राय भक्त्यवदमस्यै भक्त्यान् निर्धरामीति स्वाहा ।

पंच वरनमय कुसुम मनोहर, मासुक चक्षु सुहावें ।

गंध सुगंधी मयुकर आवें, पूजत काम नसावें ॥ पदम जिनेश्वर० ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्ममज्जिनेन्द्राय कामनाएविनाशनाय दुखं निर्धरामीति स्वाहा ।

घेवर भिष्ट मनोहर मोदक फेंगी गूजा त्पावें ।

श्रीजिनवर पद चरुतें पूजें रोग ह्युभा नाशि जावें ॥

पदम जिनेश्वर पदमादायक, धायक हो भव केरा ।

हैं चेरा प्रभु तुभगुण गावूं, पावूं मैं गुण मेरा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्ममज्जिनेन्द्राय ह्युषारोगविनाशनाय वैशेषं नि० ।

दीप रतनमय च्चांत विनाशन कनक रकावी घोर

श्रीजिनवर पदपूजत ही नर मोह भिद्यत्स्व विदारें ॥ पदम०

આપલ તાગ વદામ મુખાની પલા આદિ મગાવે ।

શીજિનવરપદ ફલતેં પૂજે મુકિ મદાફલ પાવે । પદમ જિનેસુર

ઑં દી ધીગમમજિનેદ્રાપ ધાધકઝામયે ફતં નિર્ધામીતિ રજાદા ।

જલ ગંધાક્ષત પુદા સુ ચક્રે દીપિ સુ ધૂમ મગાવે ।

ઉત્તમ ફલ લે અર્ધે વનર્ધે "રામચંદ" સુભ પાવે ॥ પદમ જિનેસુ

ઑં દી ધીગમમજિનેદ્રાપ ધાધકઝામયે ફતં નિર્ધામીતિ રજાદા ।

પંચ કલ્યાણક અર્ધે ।

ઋપદિ શીવફલેં વપે પદ્મી ગાવ અસેત ।

गर्भं सुसीमा अवतरे जज्जं त्रिविध धरि हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं मापकुण्डपाण्यां गर्भं हृत्पाण्यमं दत्ताय श्रोणमममजिर्नेद्राय अर्धं नि० ।

कार्तिक तेरसि कुरुण ह्रीं जनेमे श्रोजिनराय ।

इंद्र महोरसव करि जर्जे, जजिहूं तूर चजाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं कार्तिंकुण्डपायोदशं मन्मंगलसंदिताय श्रोणमममजिर्नेद्राय अर्धं नि० ।

महाभूति साम्राज्य ताजि, कार्तिक तेरसि स्याम ।

वसे अरनि तप धारि जिन जज्जं चरन अभिराम ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं कार्तिंकुण्डपायोदशं तपोमंगलसंदिताय श्रोणमममजिर्नेद्राय अर्धं निर्वर्णामीति०

पुनिम चैन हने अरी धाति कर्म धरि भयान ।

केवल ज्ञान उपाहयो, जज्जं पदम भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चक्रशुच शृणुष्वार्यां ज्ञानमंगलसंदिताय श्रोणमममजिर्नेद्राय अर्धं निर्वर्णामीति०

चौथि कुरुण फागुन विषे हनि अघाति जिनराय ।

मोक्ष समेद शर्की गोपे जज्जं चरण शुण गाय ॥ ५ ॥

जयमाता ।

दोहा ।

पदमनाथके पद पदम, महाअलन अविहार ।  
नम्र उभेकर सीत धरि, देहु देव मति सार ॥ १ ॥

पदम छंद ।

जय पदमनाथ कोंसंविनाथ । ऊगरे ओवक तजिकें विमान ।  
आयेह मुर्षीया गर्भमार । वदि माघ पण्डि चित्रा मुगार ॥ २ ॥  
वदि कालिक तेराध जन्म एव । आये तित चतुर्निकाप देव ।  
जय नंद नंद करते अपार । गोरि भेरु कियो अभिषेक सार ॥ ३ ॥  
धरि पदमनाथ हरि पूजि पाय । नृपधारणके दरवार लाय ।

बहु नृत्य करयोगी करै वखान । लखि मगन भये पित मात आन ॥  
 जिन दृष्टिभये नन अरुणमान । पनु दोय मत क प्रचाम जान ।  
 नृवाञ्छ पूर्व उनतीस लक्ष्य । सुख मगन भये तजि राजद्रव्य ॥ ५ ॥  
 पट वर्ष करयो नप घोर वीर । ऋनु भ्रंषमभे गिरि सिखर धीर ॥  
 रति फिरन तपे मनु भ्रान्तजाल । धरि ध्यान खडे निरभे विशाल ॥  
 ऋनु पावम नरुनल चतुरमान । धरि जोग खडे अहिलिस डांस ॥  
 ऋनु शीत नरंगनि ताल वास । बाजे सर्मार अनुभव विलास ॥ ७ ॥  
 धरि ध्यान अग्नि चउ धाति जारि । लहि ज्ञान चराचर सम निहारि  
 समवादि महिन करिके विहार । धर्मोपदेस दे भव्य तार ॥ ८ ॥  
 पट वर्ष घाटि लख पूर्वज्ञान । सब आयु पूर्व लख तीस जान ॥  
 फागुन वदि चोधि समेदधान । हानिके अघाति पहुंचे निवान ॥ ९ ॥  
 हं करुं वीनती जोरि हाथ । मुझ देहु अखै पद पदमनाथ ॥



तुम कारन विन जगबंधु देव । इह प्रचुर भगार्णवको न छेव ॥ १० ॥

पद्या ।

५०

कानिक निधिमारी, तेराति तपधारी, वैत पुनिम मभु ज्ञान वर ।  
सुरनरमग आपे, गुणगण गाये, ' रामचंद ' नामि ध्यान करं ॥ ११ ॥

हमि श्रीभक्तमार्गनिबन्धन लयाया ।

**अथ श्रीगुणार्चनाथ पुजा ।**

स्मरित ।

सुरपालि नरपाले फणी मभा माधि जिननणी,  
वार्णा सुनि प्रसिद्ध द्यौप आतप गुणी ।  
जिन सुपाल पद जुगल नमूं सिरनाथकें,





ओ ई श्रीगुणार्धनाथविनेशनाथाय नमः सर्वनाथ भूषे निर्दिष्टार्थाधि रक्षात ।

वादाय ध्येयं लोकायिस्वता, मिष्ट स्वार्थिना तयाव द्यो ।

जिन पूजे परम उछादसेनी, मुक्तिरु फल पावदी ॥ भव पास ॥

ओ ई श्रीगुणार्धनाथविनेशनाथ मोक्षफलप्रप्तये कृतं वि० ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु करु दीप दी ।

शुभ पूर फल ले अर्घ्य कीजे, 'रामचंद्र', अनूप ही ॥ भव पास ॥

ओ ई श्रीगुणार्धनाथविनेशनाथानंदपरमेश्वरनामधेयं निर्दिष्टार्थाधि रक्षात ।

पंचकल्पणक अर्घ्य ।

दीप्त ।

प्रोक्त मध्य यकी चये, पष्ठो भादव मेत ।

पृथिवीदेवी उर अवतरे, जज्जू मोक्षके देत ॥ १ ॥

ओ ई श्रीगुणार्धनाथविनेशनाथाय नमः सर्वनाथ भूषे निर्दिष्टार्थाधि रक्षात ।

जैठ सुकल द्वादसि विषे, जनमे सुरपति आय ।  
नरप तूर धुनि करि जजे, मे जाजि हं गुण गाय ॥ २ ॥

ओं श्रीं जेष्ठगुणद्वादस्यं जन्मसंख्याणार्थिनाय श्रीगुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

तुणवत ताजि साम्राज्य तप, धरार्थो अरनिमं जाय ।  
जेठ सुकल द्वादसि विषे, जजुं पदमजुग ध्याय ॥ ३ ॥

ओं श्री जेष्ठगुणद्वादस्यं सधोभुक्ताभूषणाय गुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

कृष्ण पण्डित फाल्गुन हने, धानि कर्म धरि धीर ।  
कल्यो धर्म लहि ज्ञान जिन, जजुं हरो भव पीर ॥ ४ ॥

ओं श्री फाल्गुणकृष्णपञ्चांशानां गलमंडिताय श्रीगुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

सप्तमि फाल्गुन कृष्ण द्वी, हनि अघानि सिवधान ।  
गए समेदाचल धक्री, जजुं मोक्ष कल्पान ॥ ५ ॥

ओं श्री फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षधंगलमाप्ताय गुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

आष्टमि फाल्गुन कृष्ण अष्टम्यां धानां गलमंडिताय श्रीगुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

अष्टमि फाल्गुन कृष्ण अष्टम्यां धानां गलमंडिताय श्रीगुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।

अष्टमि फाल्गुन कृष्ण अष्टम्यां धानां गलमंडिताय श्रीगुणार्थिनायाय अर्थ निर्वेण ।



૧૧  
૬૨  
ઝેઠ મુકલ છાદપિ થિયે, જનમે સુરપતિ આપ ।

નરપ તુર ધુનિ બરિ જંજે, મેં જાઝે દું મુળ ગાય ॥ ૨ ॥

ગાં નીં ઝેઠશુભ્રાદર્યાં અન્યત્તયાપ્પાભિભાપ શ્રીદુષાદ્વેનાભાપ અર્પે નિર્વેશ ॥

તૂળવત તાઝે સામ્રાજ્ય તપ, ધરત્યાં અરનિર્મે જાય ।

ઝેઠ મુકલ છાદસિ થિયે, જહું પદગજુગ ધ્યાપ ॥ ૩ ॥

અં દીં ઝેઠશુભ્રાદર્યાં અન્યત્તયાપ્પાભિભાપ શ્રીદુષાદ્વેનાભાપ અર્પે નિર્વેશ ॥

કુળ પઠિઠ ફાલુન દને, ઘાનિ કર્યે ધરિ ધીર ।

કમ્પો ધર્મે લહિ જ્ઞાન જિન, જહું દરો મગ ધીર ॥ ૪ ॥

ગાં નીં ફાલુનકુળાદર્યાં અન્યત્તયાપ્પાભિભાપ શ્રીદુષાદ્વેનાભાપ અર્પે નિર્વેશ ॥

મસમિ ફાલુન કુળ દી, દનિ અઘાનિ મિત્રધાન ।

ગપ્ સમેંદાચલ ધર્મી, જહું મોક્ષ કલ્યાન ॥ ૫ ॥

ગાં નીં ફાલુનકુળાદર્યાં અન્યત્તયાપ્પાભિભાપ શ્રીદુષાદ્વેનાભાપ અર્પે નિર્વેશ ॥

ओ ह्रीं श्रीसुगार्हपत्यजिनेन्द्राय नमः । निर्धर्मोति ॥ १॥

एति श्रीसुगार्हपत्यजिनेन्द्राय नमः ।

अथ श्रीचंद्रप्रभजिनपूजा ।

अति ।

शुभ अतिसय चोतीस प्रातिहारिज अधिका ही,

अनंत चतुष्टयजुक्त दोष अष्टादस नाही ।

आहरानन विधि करुं नाय सिर सुय करि मनही,

लोक मोट तम हरन दीप अदभुत ससि जिनही ॥ १ ॥

ओ दी ओं वंद्य रम्य जेनेन्द्र ! अथ एता अथना । संतोषद ।

ओ दी ओं वंद्य रम्य जेनेन्द्र ! अथ तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ ।

ओ दी ओं वंद्य रम्य जेनेन्द्र ! अथ मन सति रूचो मद मर । ॥ १॥



मिथ्यन्त निरगन्त तोय सीतल मधुर सुरगधकी परै ।

भरि भुंग जिनवर चरण आँग धार दे भवसुति हरे ॥

श्रीचंद्रप्रभ दूतिचंदको पर कमल नखसमलानि रह्यो ।

आतंकदाह निवारि भेरी, अरज सुनि में दुख सह्यो ॥ १ ॥

ओं श्रीं श्रीं चंद्रमणिन्द्राय नमस्तुभ्यु विनाशनाथ जलं निर्धाम्पीति स्वाहा ।

भवताप दाह दहंन मोहं एत छिन न विसारही ।

घनसार मलय धर्की जिनेसु पाजिहं दुख टारही ॥ श्री चंद्र० ॥ २ ॥

ओं श्रीं श्रीचंद्रमणिन्द्राय संसारतापविनाशनाथ चंदनं निर्धाम्पीति स्वाहा ।

संसार उदाधि अपार तारन भक्ति प्रभु तुमरी सही ।

शुभ सालि पुंज जिनाम करि हं लहूं वसुगुण वसुमही । श्रीचंद्र०

श्री श्री श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः पदपाठेयं नमः निर्धामीति स्मारा ।  
अति सुभट मार मचंड सरतें हने सुर नर पसु सवे ।

शुभ कुसुमरपौ पद पूजिहं जिन हरो मनमय दुख अवे ॥ श्रीचंद्र० ॥

श्री श्री श्रीचंद्रप्रभस्यापिने कापयाणचिचंस्नाय पुनं निर्धामीति स्मारा ।

यद लुधा मोक्षं दहे नितही, नैक सुख नहि पावही ।

चरु पिष्टतें पद पूजिहं जिन । लुघारोग नसावही ॥

श्रीचंद्रप्रभु दुति चंदको पद, कमल नख ससि लगि रहो ।

आतंक दाह निवारि मेरी, अराज सुनि में दुख सहो ॥ ५ ॥

श्री श्री श्रीचंद्रप्रभस्यापिने धुपतोषिनायनाय नैवेद्यं नि० ।

अति मोहतम मम ज्ञान दावयो, स्व पर पद नहि वेवही ।

तुम चरण पूजूं रतन दीपक, करो तमको छेवही ॥ श्रीचंद्रप्रभुदुति०

श्री श्री श्रीचंद्रप्रभस्यापिने मोहावहाचिनायनाय दीपं निर्धामीति स्मारा ।

शुभ मलय अगार सुगंध सौरभ, धनी अलि बहु आवर्दी ।

जिन चान आगे धूप होये, कर्म वसु जरि जावहीं ॥ श्री चंद्रप्रभ०

ॐ हं श्रीचन्द्रप्रभासमिनेन्द्रमर्म दटनाय धूमं निर्घषाभिति स्वाहा ।

द्रुम मोख मग अंतराय राकपी, मोहि निरबल जानिकं ।

जिन मोह धों तव चाण पूजुं, फल मनोहर आनि० ॥ श्रीचंद्र०

आं श्री आद्यं प्रभवमिति नो गच्छकलप्रसवे फलं निर्वणामीति स्वाहा

जल गंध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौषधी ।

करन धाल अर्ध बनाय सिव मुख, "रागचंद्र" लहै सही ॥ श्रीचंद्र०

ॐ श्री श्रीधर्मप्रसादिने अनन्तदर्पद्रमाप्यं अपं निर्वाणमीति स्वाहा ।

पंच कृत्यान्तक अर्ध ।

प्राप्त ।

चैत असित पंचणि चये, वंजयंतो हृद् ।

उद्दर मुलजना अवतरे, जजुं त्रिविध गुणवृन्द ॥ १ ॥

मो ही वैश्वरूपं चर्यां पर्येषगत्प्रविताप श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय नमः ॥

असित पोह एकादशी, जनेमे जुत त्रयज्ञान ।

वासव उत्सव करि जजे, जजुं जनम कल्पान ॥ २ ॥

ओ ही वैश्वरूपं चर्यां ज्ञानरत्नाणसं विताप श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय नमः निर्वाणमीति ॥

चंद्रपुरी साम्राज्य तजि कृष्ण हकादशी पोह ।

परचां तम तप वनविषे जजुं नाशहित द्रोह ॥ ३ ॥

ओ ही वैश्वरूपं चर्यां विताप श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय नमः निर्वाणमीति ॥

फाल्गुण मसि कृष्ण ही याति हने लहि ज्ञान ।

भट्यातम वोषे घने जजहुं ज्ञानकल्पान ॥ ४ ॥

ओ ही कल्पवृक्षसं चर्यां विताप श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय नमः निर्वाणमीति ॥

सुकल फाल्गुण सप्तमी, शेष कर्म दानि मोख ।

रापे समेदाचल धर्मी जजुं गुणनके कोख ॥

ओ ही फाल्गुणशुक्लसप्तमी मोह विताप विताप श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय नमः निर्वाणमीति ॥

अथ जयमाल ।

बोदा ।

वसुजिन वसु क्रम हानिके, वसे धरा वसु जाय ।  
हरो हमारि कर्म वसु, नमं अंग वसु नाय ॥ १ ॥

ब्याल धर्दा अगत गुरुधी ।

अहो चंद्रदुतिनाथ द्वायक अंतरजापी ।

सकल लोक तिरकाल लखे जुगपत गुणधामी ॥

जे चर अचर अपार अनागततीत उपायो ।

लोकालाक निहारि लखे कहू नाहि छिपायो ॥ २ ॥

भारुपा चर्पो कर भाहि सिधारथ धारि निहारि ।

अथवा अंगुरी रेख लखे कर जुत हकवारि ॥

एसो ज्ञान अपार और कहं नाहि सुन्यो है ।

दरसनको परताप तुहे जिन मोहि मन्यो है ॥ ३ ॥  
मैं दुख पाये घोर चतुरगति माहि धनैरे ।

तुमते छाने नाहि कक्षा भाखूं जिन भेरे ॥

सब शिशुकी पै बात रयात पित जननी जाने ।

माया विन नहि देहि तोय पय पान न खाने ॥ ४ ॥

देखो करम अपार सुभट जड चेतन नाहीं ।

चेतनकुं करि रंक चोर जिम बांधत जाहीं ॥

सार्तो अवनिमझारि नरक दारुण दुख देही ।

कोऊ सरने नाहि धाम विन निहवै येही ॥ ५ ॥

तिरजंगति दुख घोर महे विन संजम धारे ।

भुंछ पास लडि भार अर दे पीठ मझारै ॥

मारत बधकर धाय जाल मधि उडन पंखेरु ।

पकीर कसाई लेय सरनि नाहि जिहिचेरु ॥ ६ ॥

मात्रुप गाति कुल नीच विकल हंढ्री चखि नार्ही ।

भृपति आगे दोरि तुन्नक कंधै धरि जार्ही ॥

अहि निशे चौकी देह मेह सिय घाम सेहे ही ।

विन दरसन दुख येह धने चिरकाल लहे ही ॥ ७ ॥

कोऊ पुन्यवसाय बाल तपते सुर थायो ।

हस्ती घोटक बैल महिप असवारी थायो ॥

पूरन आव जु थाय तबै माला मुरझानी ।

आरातिते तजि मान कुसुमभव पाय अझानी ॥ ८ ॥

ऐसे दुःख अपार सहे धिरता नहि पाई ।

क्रोध मान छल लोभ थकी दिन दिन अधिकारै ॥

तुम करुणानिधि लेखि सरानि आयो ततकारी ।

दुखको कर निरवार अहो जगपति जगजारी ॥ ९ ॥

जगनाथक जगदीस जगोचम दृष्टि निहारो ।

मोक्ष दास विचारि करो वपुर्ते निरवारो ॥

या वपुसंगति पाप सहें दुख और न हेती ।

यह निश्चै करि जानि लखे तुम वानी सेती ॥ १० ॥

करम विचारै कोन भूलि मेरी अधिकार्ह ।

अगनि सहै धनघात लोहकी संगति पार्ह ।

ऐसे या वपुसंग महे दुख और न सेती ॥

धनि धानी तुम देव सुगी गुरुके मुख पती ॥ ११ ॥

तुम अनुग्रह पसाप, तजुं दुर ध्यान विकारो ।

वरनादिकर्ते भिन्न, लखूं चिद्रूप हमारो ॥

जोतिस्वरूपो देव, वसे पाही घट माहीं ।

दवं कोन सधान, लखूं तुम ध्यान उपाहीं ॥ १२ ॥



तेरे ध्यान प्रताप, करम जरि जाय अनंता ।  
'रामचंद्र' करि ध्यान, लहे सुख नर गुणवंता ।

हह भव सुख अवार, और भव सुर पद पावै ।  
अनुक्रमतें निरवान, जिनके सुर घर करि गावै ॥ १२ ॥

दोहा—बसु द्रव्यले सुध भावतें, जजुं तिहारै पाय ।

दंडु देव शिव मुझ अवै, अहो चंद टुटि राय ॥ १३ ॥  
श्री श्री श्रीचंद्रमल्लामिने पदार्थ निर्वपामीति रवादा ।

इति श्रीचंद्रमल्लजा समाप्ता ।

अथ श्रीगुणदंताजिनपूजा ।

श्रीरघु ।

तीन गुणति ब्रूत पंच महा पन सामिति ही,  
द्वादश तप उपदेश सुधारै संत ही ।

पुष्पदंत जिन पाप नभुं सिरनाय ही,

आह्वानन विधि कलं एक चित थाय ही ॥ १ ॥

ओं हीं श्रीपुष्पदंत भगवत्जनैर्द । अय भवत भवता । संशोषद ।

ओं हीं श्रीपुष्पदंत भगवत्जनैर्द । अय सिष्ठ निष्ठ । ठः ठः ।

ओं हीं श्रीपुष्पदंत भगवत्जनैर्द । अय भव सनिहिषे भव भव । वषद ।

सोऽय ।

क्षीर उदधि सम नीर, भरि द्वाराी त्रय धार दे ।

नभे जन्ममृति पीर, पुष्पदंत जिनवर जने ॥ १ ॥

ओं हीं श्रीपुष्पदंतभगवत्जनैर्द्राव भगवत्जनैर्द्राव भगवत्जनैर्द्राव ।

किंलगागर धनसार, कुंकुम गंध मिष्टापर्क ।

भव आताप निवार, पुष्पदंत जिनवर जने ॥ २ ॥

ओं हीं श्रीपुष्पदंतभगवत्जनैर्द्राव संसारावनिनाशनाय धंदने निर्देया ॥

तेदुल धवल अनूय, मुक्ताफल सासि किरण सम ।  
होह मुक्तिको भूय, पुण्यदंत जिनवर जजे ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुण्यदंतपण्यज्जिनेन्द्राय मोहाधकारविनाशनाय दीपं निर्घया०

पोह ।

कुम्भ कल्पनरु लेय, मन मोहै चखि भावने ।  
व.ण मनोज नरेय, पुण्यदंत जिनवर जजे ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुण्यदंतपण्यज्जिनेन्द्राय कामाण्यविधंमनाय पुण्यं निर्घयाप्राप्ति रवाहा ।  
वंड धिरंत चरु सार, रसना रंजन आनिये ।

होय लुभा निरवार, पुण्यदंत जिनवर जजे ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुण्यदंतपण्यज्जिनेन्द्राय ध्यातंगविनाशनाय नैवेद्यं निर्घया०  
दीप रत्नन मय जगति, कंचन भाजनये धरे ।

होह ह्रीं ज्ञान उद्योत, पुण्यदंत जिनवर जजे ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुण्यदंतपण्यज्जिनेन्द्राय मोहाधकारविनाशनाय दीपं निर्घयाप्राप्ति०



**अगर कपूर भिलाय, धूरा दहन शुभ कीजिये ।**

अष्ट कर्म जरि जाय. पुण्यदंत जिनवर लजे ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीं पुण्डरीक नमः । अनेन्द्राण्यकर्मदलनाय पुणं त्रिवेणोति स्वाहा ।

उत्तम फल अति सार, नाम्ना नैत्र सुहावने ।

द्वोय मुक्ति भक्तार, पुण्यदंन जिनवर जने ॥ ८ ॥

**श्री श्री भगवत्प्रेमनेन्द्राय भोऽसकृन्नाम्नये कृतं निर्वाणार्थि स्वाहा ।**

अर्धं अनूतनाय, “रागचंद्र” वसुद्रोपते ।

दोष मुक्ति को राय, पुण्यदंत जिनवर जने ॥ ९ ॥

प्रो हं प्र.पुष्पवृत्तभाष्ये अनेन्द्राय ब्रतद्वैधरथाःसुते अयं निर्वेपासीति स्वाहा ।

**पंचकल्याणकं भव ।**

दोहा-फागुन नवमी कृष्ण द्वी, आरण स्वर्ग विहाय ।

गमोदितो भवन्ति तेषां गमोदितो व्याप्तः ॥ १ ॥

अं श्री कः लण्डणनयन्या मर्षमंगलोलिनाय श्रीगुणदंजिर्नेद्राय अर्पे निर्वया० ।

अगान भित प्रतिपद विषे, तीन ज्ञानजुन देव ।

जनमं हरि सुरांगारि जजे, जज्जं मोक्ष हित एव ॥ २ ॥

अं श्री भार्गवार्थगुण्यस्य दार्पा मन्त्रकृत भाष्यप्रतिपाद्य श्रीगुण्यदंजिर्नेद्राय अर्पे नि० ।

मित मनिपर अगहन धर्यो, तप तजि राज्य महान ।

सुननरस्यगपति पद जजे, जजिहं नपकल्यान ॥ ३ ॥

अं श्री मर्गदीर्घद्वयलक्षविशया मयोभूतगर्भगण श्रीगुणदंजिर्नेद्राय अर्पे नि० ।

दायज कार्तिक सुकल ही, धार्तिकर्म दनि ज्ञान ।

लस्यो धर्म दुविधा कस्यो, जजिहं ज्ञान व त्यान ॥ ४ ॥

अं श्री र्त्तिकद्वयलक्षविशया ध्याननंगकर्मलनाय श्रीगुणदंजिर्नेद्राय अर्पे निर्वया० ।

भादव सिन अष्टमि हने, सकलकर्म शिवधान ।

गये संसेदाचलप्रक्री, जजिहं मोल कल्यान ॥ ५ ॥

अं श्री भाद्रपदशुक्लपंचमी माघकल्याणसहिताय श्रीगुणदंजिर्नेद्राय अर्पे निर्वया० ।

देख ।

पुष्पदंतके विपल गुण, सकल सुखाकर पेख ।

सुपरि सुपरि चरनन करुं, करि करि हरप विशेष ॥ १ ॥

चाल-सींभर जिनबंधिष्ठा जयधार से ।

पुष्पदंत जिनबंधिस्त्रया, जगसार हो कांकरी पुर धान ।

पियरा नमूं सुग्रीवजी, जगसार हो, वंश दक्षत्राकु महान ॥

महान वंश दक्षत्राकुपे चप, स्वर्ग आरण्य भये ।

धन देवि रामा मातके तर, कृष्ण फागुनमें धये ॥

गर्भावतार कल्याण सारपति, ठानि सुरलोकें गये ।

जननी सु सेवा राखि धनपति, मास नव सुखसौं गए ॥ २ ॥

अगहन सित प्रतिपद भली, जग जनमें सुराधिप जानि ।

मेरु सुदर्शन ले गये, जग सार हो, छीरोदक शुभ आनि ॥

आनि जल अभिषेक करि फुनि, नृत्त तूर वजायये ।

कहि पुष्पदंत पिता सु जननी, सोषि मंगल गायये ।

फुनि नृत्य तांडव हरी कीर्त्तो, कौन उपमा दीजये ।

जन्म कल्याण उछाह मनमें, राखि नितधी जीजिये ॥ ३ ॥

तन द्वाक्षि सम धनु सत्त भलो, जग सारहो, आयु पुरव लखदोष

लख पुरव मुख भोगिके, जगसारहो, विरकन भवतें दोष ।

दोष विरकत सुकल परिवा, मास मगसिर वन गये ।

नमः सिद्धेभ्यः कहि लोच किनो, ध्यानमें प्रभु धिर भये ।

हरि केशा पंचम उदधि खेप, आय पद पूजा करी ।

निःकर्म कल्यानक सुमहिमा, पुन्यकरता अवहरी ॥ ४ ॥

वरप चार बहु तप करे, जगसार हो, ध्यान अग्नि परजालि

फातिफ सुदिदोपज भली, जगभार हो, धाति चतुक्क लहुवालि ।  
 लहु वालि धाति उपाय फेवल, लोक करवत पेसही ।  
 समवादि सहित विदार करिके, लहो धर्म विसेसही ।  
 तुम वचने अमृत पानेँ, उर दाह तत खिणही मिटयो ।  
 लसि ज्ञान करुपानक सुमहिमा मोह तम मेरो फटयो ॥ ५ ॥  
 गणधर हरि मुनि भुनि करी जगभार हो सो धुति जनरयो होय ।  
 धनि दिन यो धनि या पट्टी जगभार हो धाने धनि यो चखिदोय  
 मो चखि धनि तुम दस देरुगो परमि पद धनि कर भये ।  
 धनि धनि ये वन्नु अंग मेरे भयान कर नुपको नये ।  
 धाने भर्दे रसना आन मेरो । नाय धुति तुम करतही ।  
 धाने उभे पद तुम धाम आयो सेवे कारज सरत ही ॥ ६ ॥  
 निर अंबर सुंदर घने, जगभार हो दिग अंबर सुखदाय ।



निराभरण तन अतिलसे, जगसार हो को रवि को शसि काय ॥

शसि काय लांछित अभसम, दिन हीन वृद्धि सदा भौ ॥

तुम चरण नखदुति कोटरवि ना, और उपमा को पौ ॥

दरसन ज्ञान चरित्र भूषण, देखि सिव तिय हो खुसी ॥

अलिङ्ग देने भई सनमुख, तुहे छवि लखि अति हसी ॥ ७ ॥

निरु आयुध निरभौ घने जगसार हो कोप तर्णो नहीं लेख ॥

मोह सुभट किम जय कियो, जगसार हो जुत परिवार महेश ॥

महेश हस्ती ध्यानोप संनाह, संजम अति छिमा ॥

प्रपलाप असुरन संग लागौ, रही ना तयुकी जमा ॥

सो फेरि निकट न आवही, जुत समर स्वपननके विले ॥

हरि हरादिकके हिथे, वासी करो जगके अर्धे ॥ ८ ॥

तुम गुण गणपति मन धरे, जगसार हो ये वच कहे न जाय ॥

ज्यों तारे सव गगनके जगसार हो, ये करें न समाय ॥

करमें न तारे आय ज्यों, गुरु सहस रसना धार ही ।

वरनन कर तो पार पावै, रह्यो पौरुष द्वार ही ॥

मैं बुधविना भुति करन उभरयो, होय कैसे नाथजी ।

शसिविच जलमें चाल विनु बुध, गहै किम गहि हाथजी ॥ ९ ॥

मैं विनबुं कर जोरिके, जगमार हो, तुम गुणको नहिं बेव ।

हस भवमें वह दुख सदा, जगसार हो, देहु अवल पद देव ॥

देव ! अवल पद देहु मोहं, मरन चरणन की गही ।

करि ' रामचंद्र ' लहेत सिव जो, गायसी सुर धरि सही ॥

इन होय मंगल नित नये, धर रिद्धि सिद्धि अनेक ही ।

अज्ञान तिमर बिलाय ततीछन, हिये होय विवेक ही ॥ १० ॥

अष्टभि सित भाद्रं नाशि अषात्सं पुष्पदंत सिवनगर गये ।

सुर नर खग आये मंगल गाये गिरि समेद कल्याण धये ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतविभेन्द्राय मदायै निर्वणार्पति स्वाहा ।

इति श्रीपुष्पदंतविनपूजा समाप्ता ।

## अथ श्रीशीतलनाथपूजा ।

अष्टिष्ठ ।

शीतल जुग क्रम नमूं धर्म ददाथा हम भार्यो,

उत्तिम छिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सु आर्यो ।

सुनि प्रतिबुध ह्वे भवि मोछि मारगकं लगे,

आह्वानन दिधि करुं चरण जुगकरि अनुरागे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथगणविभेन्द्र ! अथ अक्षर भवत । संयोषद् ।

फल लेहि उचिप मिष्ट मोहन, लोमि श्रीफल आदि ही ।

जिन चरण पूजै मुक्तिके फल, लहै अवल अनदि ही ॥ भवि पूजि ॥

प्रो दी यो वलनाथजिनेद्राथ मोसफलप्रप्तये फलं निर्धयाभीति स्वाहा ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अति दीप ही ।

करि अर्घ धूप समेत फल ले, 'रामचंद्र' अनूप ही ॥ भवि पूजि ॥

प्रो दी श्रीयो वलनाथजिनेद्राथाऽनर्घ्यदत्ताप्तये अर्घं निर्धयाभीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक अर्घ ।

दीहा ।

चैन कृष्ण अष्टमि चये, अच्युततैं भगवंत ।

उंदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्षके कंत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंदिनाथ श्रीयो वलनाथजिनेद्राथ अर्घं निर्धयाभीति ०

कृष्ण द्वादसी माघकी, जनमे श्रीजिनराय ।

उत्सव करि वासव जजे, भँ जाजि हं जुग पाय ॥ २ ॥

ओं दीं पाषण्डादप्या जन्मपंग्लमंदित्राय श्रृंगीरलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वर्णार्णो  
असित पाष द्वादसि तर्जो, तृणवत भूति मदान ।

नगन दिगंबर वन वसे, जर्जुं दसम भगवान ॥ ३ ॥

ओं श्रीं पाषण्डादप्या तपोग्लमंदित्राय श्रीश्रीवलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौष चतुरदसि स्याम ही, शुक्ल ध्यान असि धारि ।

हने कर्म चउ घातिथा, जर्जुं देव मुझ तारि ॥ ४ ॥

ओं श्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केषलपानांदित्राय श्रीश्रीवलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

उष्टमि सित आसोजकरी, गये मोक्ष भगवान ।

चसु विधि पद पंकज जर्जुं, मोहि देहु शिवथान ॥ ५ ॥

ओं श्रीं आष्टिमिपुण्ड्राष्टम्यां भोगकस्याणकमंदित्राय श्रीश्रीवलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयभाला ।

दोहा ।

सीतल तुम पद कमलजुग, नमूं सीस धरि ह्वाथ ।  
भवदधि डूवत काटि मो, कर अवलंब दे ह्वाथ ॥ २ ॥

चाह मंगलकरी ।

सीतल पद जुग नमूं उभैकर जोरिही ।

भिदलापुर अवतरे अच्युतपद छोरिही ॥

दिदरथ तात विरयात सुनंदा मायजी ।

चैत कुल्लव वसु गर्भ लिपे सुखदायजी ॥

सुखदाय गर्भकल्याण काजे आप सुरपति सब मिले ।

जननी सुषेवा राखि धनपति आप सुलोकें चले ॥

षटमास ले नवमास दिनेमें बार त्रिय मणि वर्षये ।

गर्भं कल्याण महंत महिमा दोखि सब जन दर्पये ॥

पूर्वापाद नछिन माष वदि द्वादसी ।

जनेमे श्रीजिननाथ नभोगण सब हंसी ॥

चतुरनिकाय मझारि धंटादि वजे भले ।

नये मौलि फुनि पीठ सर्वे हरिके चले ॥

चले पीठ अवधिते जिन जन्म निश्चये हरि लखो ।

ढंगि सप्त चालि जुति टानि वासव मेरु चलनेकं अखो ॥

जिन लेय पांहुक वनविषं अभेक करि पूजा करी ।

षित मात दे जन्मा कल्याणक टानि थल चालो हरी ॥ ३ ॥

हेम वरण तन तुंग निर्वे धनुको सही ।

लछिन श्रीवछ आशु पुर्व लखकी कही ॥

नीति निपुण करि राज तर्जो तृणवत तर्वे ।

लौकांतिक सुर आय संवोधि चले सवै ॥

रा- ६२

संवोधि आपे माध द्वादसि कृष्ण श्रीजिनवन गये ।

नमः सिद्धेभ्यः कहि लौच कीर्नो उपधि तजि कर मुनिभये ॥

सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गायही ।

निकर्म कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पायही ॥ ४ ॥

पढमि धरि निज ध्यानविषे ममु धिर भये ।

पूरन करि अनिकाज सेयपुरमें गये ॥

क्षीरदान जुत भक्ति पुनर्वसुर्जा दिये ।

हरिष देन आश्चर्य पंच ततस्त्रिणकिये ॥

किये आश्चर्य रत्न वर्षे अर्घ द्वादस कोटि ही ।

धरि ध्यान सुकल उपाय केवल धाति चारो तोटि ही ॥

चर अचर लोक अलोक जुगपति दोखि सबही बनिषे ।



गुनि हंद्र ज्ञान कल्पण उत्सव पौषत्रयि चउदसि क्रिये ॥ ५ ॥

योजन साढा सात लसे समयादिही ।

लथि सुनिमें गण देव हकासी आदिही ॥

पूरव सहस पर्यास हीन वष तीन ही ।

विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही ॥

भई छीन समेद गिरिसे आशनी तित अष्टमि सही ।

असि ध्यान मुकल थकी अघाते हने मुक्तितया लही ।

सब हंद्र आय क्रियो महातेसव मोक्ष मंगलगायही ॥

हं नमूं सीतलनाथके पद अमल गुणगण ध्यायही ॥ ६ ॥

वसु खित वसु क्रम दानि वसे वसु गुणमई ।

ज्ञानावरणजघाति विश्व जानपो मही ॥

देखो लोक अलोक हने द्रशनावली ।

वेदनिको करे नाश अनाथ भये बली ॥

फुनि बली मुद्द चरित्रमें धिर मोह नाशयकी भये ।

अवगाह गुण छप आयुते निरकाय नाम गोपे यये ॥

गुण अगुरलघु छप गोतके अंतराय छप बलनंत ही ।

सिध भये सीतलनाथजी तिरकाल घेदे संत ही ॥ ७ ॥

वसु गुण ये विवहार नियत अनंत ही ।

जार्णि गणपरपे न वखानत अंतही ॥

ज्यो जलनिधि विस्तार कहे करते हतो ।

बाल न मरम लहंत न जानत है कितो ॥

कितनौ न जार्नि उदधि है, जिम तुहे गुण दरणन करुं ।

मैं भक्तिवश वाचाल हूँ कछु शोक मन नाहीं धरुं ॥

गुण देहु तेरी करुं विनती अहो सीतलनाथजी ।

“चंद्रराम” सरनि तिहारी आपो जोरि करिके दायजी ॥ ८ ॥

घोषा ।

सीतलके पद कपल जुग, त्रिविध नभं मुख पाय ।

भव दुख ताप मिटाययो, अहो दसग जिनराय ॥ १० ॥

ओ ईं श्रीर्षासलनाथजिन्द्राय प्रदामं निर्वणामीति स्वाहा ।

इति श्रीवल्लभायजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीश्रेयांसनान्धपूजा ।

काव्ये ।

सभालोक सुनिधर्म अंग द्वादस श्रुतिसारे,

भये अनन्दिता सर्वे श्रेय जिन भवि बहु तारे ।

प्रसमचिच करि कोप हन्यो बंद जुगकर ही,

आह्वानन विधि करुं चरण जुग दियमें परही ॥ १ ॥

आं ही धेधननाथ भिनेंद्र । अत्र अत्रार अवतार । संशोषट् ।

आं री धीधेशसत्ताथ भिनेंद्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । वः ठः ।

आं री धीधेशसत्ताथभिनेंद्र । अत्र मय सचिद्विभो भव भव । वषट् ।

मोक्षरत्न धर ।

हिमन उद्भव रवच्छ गंगोदकं कनक कुंभभरेन सुगंधिकं ।

जनम मृत्यु जर । क्षय कारणं । परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥

ओ ह्रीं धीधेशसत्ताथभिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाथ अलं निर्वेगामीति०

अगर चंदन कुंकुम द्रव्यकं अमर कोटि अमंति सुगंधिना ।

प्रचुर दुख भवार्णव नाशनां परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥ २ ॥

ओ ह्रीं धीधेशसत्ताथभिनेंद्राय संसारवाधविनाशनाथ धंदनं निर्वेगामीति स्वाहा ।

सरल सालि अखंड मनोहरं लसत सोममरीचि समानकं ।

सुभग मौक्त्य अर्धैपद कारनं परिजजे क्षिरयांस पदाब्जकं ॥ ३ ॥

श्रीं दी श्रीश्रेयांगनायजिर्भेद्राय प्रथमपदमाप्तये अक्षगान् निर्धयामीति स्वाहा ।

कुसम ओष कल्पतरु पावने, हरत चाक्षि सुगंध सुहावने ।

अशुभ काम मनोद्भवनासनं परिजजे क्षिरियांस पदाब्जकं ॥ ४ ॥

श्रीं दी श्रीश्रेयांगनायजिर्भेद्राय कामपाणविनाशनाय दुष्पं निर्धयामीति स्वाहा ।

मरम मोदक घेवर चावरं, लसत कांचन पात्र चरोत्तमं ।

प्रचुररोगक्षुधा निरनाशनं, परिजजे क्षिरियांस पदाब्जकं ॥ ५ ॥

श्रीं दी श्रीश्रेयांगनायजिर्भेद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्धयामीति स्वाहा ।

कनत कांचन पात्र सुदीपकं, लसत जोति विवर्जित धूम्रदी ।

अखिल गोद विभ्रंसन कारनं, परिजजे क्षिरियांस पदाब्जकं ॥ ६ ॥

श्रीं दी श्रीश्रेयांगनायजिर्भेद्राय गोशेषकारविनाशनाय दीपं निर्धयामीति स्वाहा ।

अगर कुरुन कपूर सुचंदनं, सुरभितागत पटपद वुंददी ।

निचय कर्मा हुतासन जारनं, परिजजे क्षिरियांस पदाब्जकं ॥ ७ ॥

श्री भक्तियोगसनाथचिन्तामणिः ॥ १ ॥  
 मधुरशोफलचोक्तं ह्यहो ललितं गणैर्महाराजं अञ्जितं ।

अतुल सौख्य महाफलदायकं, पारजनं शिरियास पदान्तकं ॥ ८ ॥

[illegible]

सलिल गंध सु संदुल पुष्पकं, चरु सु दीप सुधूप फलीषकं ।

परम मुक्ति सुधान् मदायकं, परिजने शिरसात् पुनः पुनः ॥९॥

श्री ॥ धामधामनाथनिर्ऋणानन्दपराशरभक्तनिर्ऋण

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ४ ॥ कर्मणि कृत् ॥ १५ ॥ कर्मणि कृत् ॥ १५ ॥

पुष्पेतरत्न-द्विचपे, विमलोत्तरं अवतार ।

५५। जेठ असेतहा, लयो जेजू-अवतार ॥ १ ॥

सं. ॥ चण्डिकायाः पञ्चमस्तोत्रम् ॥ आध्यात्मनाथकृतम् ॥



अथ जयमाला ।

श्लोक ।

श्रेय तणे पदकमल जुग, नमूं उभै करजोर ।

प्रचुर हई भवतार तुम, हो निहवै नहि ओर ॥ १ ॥

बाल पंचमंगलकी ।

जे जे शिरयांस नमूं सिरनापही, चप पुष्पोचरयकी सिंघपुर आपही  
विमलाउर अवतार जे ठव दिछा दिलियो गर्भ करण कइंद्र सबै मिलि की कयो  
कीयो गरभ करण सुरणति रुचिकव ॥ सिनिपति कह्यो ।

तुम कराहु सेवा जननिकेरी छपन, सुन करि सुख लख्यो ॥

हुनि धनद वर्षा रतनकेरी मास नर पट लो करी ।

वा समै हिरदे बसहु मेरे धन्य दिन धनि जा घरी ॥ २ ॥





अले दितिमित सदाज असिसे, लहे दस जिन जनमदी ।

तन हेम आसी बंद आप, सुलाख चवरासी कही ॥

करि राज घास विपाल लखदी, रयाणि सुणवत वन गये ।

गुर असुर फाल्गुण, कृष्ण, रयारसि, ठानि जसव सवनये ॥ ४

पराज चरित मन सान जिनेरुं कुं भयो ।

पथम पूरन ठानि अरिठपुरमें गयो ॥

तरां दयो पपदान लाह नरनंद ही ।

परसे रवन अपार भयो सुख कंद ही ॥ १

सुखकंद चरसवमे करायो, तप पोरा द्वादश विधि तदा ।

असिभ्यान सुमल भकी दने, जउपाति दुसरा विधि जदा ॥

सुर असुर सान कल्याण पुजा, ठानि बहुभुति चवरी ।

सो घोस पावन माप मानस, सकल मंगलकी घरी ॥ ५ ॥



संभवे मागपिभाष सप्त जन, तोष षट् रितु फल फलै ।  
 सप्त सद्यु मैत्री भान अट्ट दह, मुझभू वृष चल चलै ॥  
 जुनगंधवाल गंधोदि पराधा, विमल नभ सुर जै करें ।  
 स्थित वात सोपे द्रव्य मंगल, कमल पद तल सुर घेरें ॥ ७ ॥

हम गुण जुक्त जिनेस, विहरि भवि तारही ।

परस लास हक्कईस, ज्ञान प्रभु धार ही ॥

शेष राखो हक मास, समेदाचल ठये ।

हनि अपाति सिवयान, पूरण श्रावण गये ॥

गये श्रावण सुकल पूनिम, मोक्ष तब हरि आय ही ।

वसुभेव पूजा ठानि उत्तमव, मोक्षमंगल गाप ही ॥

सो मोक्षमंगल देहु मांके, श्रेयजुत श्रियनायजी ।

‘चंद राम’ श्रावै वंदि सतवै, जोरिकै जुग दायजी ॥ ८ ॥

दीष्टा ।

श्रेयतणे पद मो द्विषे, तिष्ठौ आठौ जाम ।

मो द्विष श्रेयपदां विषे, रद्दो द्वोय सिव ताम ॥ १९॥

ओ दी धीश्रेयासनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रेयासनाथजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीवासुपूज्यजिनपूजा ।

राजा ध्वज ।

वासपूजि जिन नमूं रतनत्रय सेखर धारयो ।

द्रादस तप सिंगार वधूसिव दिष्टि निहारयो ॥

कंठालिंगन दैन लुब्ध हूँ सनमुख आहं ।

आह्वाननविधि करुं वारत्रय मनवचक्राहं ॥ १ ॥

ओ श्री श्री गुरुभक्तियोगे । नम आत्मा अस्मदा । सर्वोपदे ।

ओ श्री श्री गुरुभक्तियोगे । नम विष्णु विष्णु । तः तः ।

ओ श्री श्री गुरुभक्तियोगे । नम मम सन्निहितो भव भव । पद ।

॥॥ विष्णुभक्तियोगे ।

छिरोदधि नीरं, निर्मल सीरं, प्रियगंध सुभ भृंगभरं ।

। जिनवरपद सारं, जज्ञि अविहारं, जनमसुचि के दाहहरं ॥

वंपापुर धानं, सुभ कल्याणं, वासुपुत्र जिनराज वरं ।

वसुविधि करि अरुणे, भवदुख विहाय, परवे सख सुख तास परं ॥

ओ श्री श्री गुरुभक्तियोगे । नम मम सन्निहितो भव भव । पद ।

अति सीतल चंदन, दाह निकंदन, केसर अंगार कपूर धूसो ॥

सुभ सोरभ भावे, पधुभर पावे, पूजि जिनेश्वर पाप नसो ॥ चंपा ॥

ओ श्री श्री गुरुभक्तियोगे । नम मम सन्निहितो भव भव । पद ।

सिन सालि अखंडं, दुरित विहंडं, मोमप्रभा मनहर रगवे ।

श्रीजिनपद आगे, पद्म रचावे, तुरत अखे पद भवि पावे ॥ चंपा ॥



शुभ भीफल तर्पावें लेंग मिळावें, पुंगी सारिक मनदोर ।

१०८ धाजिनवद आंगो, पूज रचावें लेंदें मुक्तिफल सुखकारे ॥ चंपापुर०

श्री ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अति निर्मल नीरं गेप गदीरं, तंदुल पुष्प सु चर लावें ।

पुनि दीपं पूरं फल सु अन्नं अर्घं राम” करि गुण गावें ॥ चंपापुर० ॥

श्री ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पंच कल्याणक ।

दीर्घ ।

महासुदने चर लयो, दयामा उर अवतार ।

दर्या साट असेव दी, जवूं भवार्णवतार ॥ १ ॥

श्री ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



चउदसि फागुण कृष्ण ही, वासवजन्मकल्पान ।

कीनों उरसव करि महा, मैं जाजि हूं धरि ५पान ॥

ओं धीं फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंदिताय श्रीवाद्युष्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

फाल्गुण चउदस स्यामही, लखि भव अनित असार ।

राज रंयागि तप वन धरयो, जजुं चरन सुखकार ॥ ३ ॥

ओं धीं फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां सधोमंगलमंदिताय श्रीवाद्युष्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वेषामीति०

माघ सुकल द्वितिथा हने, धाति करम धरि ५पान ।

कल्यों धर्म केवल भयो, जजुं ज्ञान कल्पान ॥ ४ ॥

ओं धीं माघशुक्लद्वितीयायां ध्यानमंगलमंदिताय श्रीवाद्युष्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

भाद्रव चउदसि सुकलही, हनि अघाति भगवान ।

लही मोक्ष सुखमय सदा, पूजुं मोक्षकल्पान ॥ ५ ॥

ओं धीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंदिताय श्रीवाद्युष्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वेष० ॥

अठन धरन अविहार, चासुपुजि जिनकी अंगी ।

अच्छ भवद्विषाय, देहु सुधति विनवी करुं ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

व सुपुजि जिनवने वंस करतानही चणपुमं भये नमं धरि पान ही ।

धमी तथा ममदाद नार्थ विवमतने । महासुकुते आपुजिहेनरु जपने ॥

फलगुणवतरमिहृण जन्ममभु गोमयो पीनलो कमक्षी रिमहा अनदपया

नपे मुकटकुनिपीठ सुरासुरा के हले जन्मकल्पण के कोलसुत्रे वासवचले ॥

महाभस्वर लेवाय सनान रापही वामपुजिधारिनाम पितोषर आपही ॥

माहयनलपटानरा फदिमपरिकारयो भूतलक्षणे वसुदेवमहा आनंदमंथो

मचरि पनुष उलगं कापु जियभानही साखवदसु व्यापमहिषविह जानही

ना ज वयो विरहालमहासुखदापही सरे विनदर ज्ञानि भावना आपही

॥ १ ॥

कालमुन चउदभि स्याम देवकर्षि जायके ॥

पुण्याजि सिम देव संवोधे व्यापके ॥

इंद्रसिंगार वनाय कल्पाणक तप करचो ॥

पाडलतरुतल जाय जोग वनमें धरचो ॥ ६ ॥

मनपरजे भयो ज्ञान तलजिन ही जमे ॥

पटप पूरण टानि असनहित जिन तव ॥

पुन विद्वारथ गये दान सुर दयो ॥

मरु रतन अपार हरम अति ही भयो ॥ ७ ॥

वरप एक छदमस्त विनिमयिष तप करे ॥

पान सुफल अतिथकी प्राति चउ जिन हरे ॥

उजयो केवलज्ञान उभे भित पावही ॥

करी धर्मकी वृष्टि गिदयो भवदंषि ही ॥ ८ ॥

विहरे आरज देश वोधि भविलोग ही ।

गये चंपापुर मांदि निरोध्यो जोग ही ॥

दनि अपासि सिवधान गये जिनराय ही ।

भादव सित चउदसी सुरासुर ध्यापही ॥ ३ ॥

मोक्षकल्पाणक यान पूजि लतसव करचौ ।

मंगल गान उचारि महा आनंद धरचौ ॥

“रामचंद” कर जोरि नमै करुणापती ।

मोक्ष भवै तारि अरज सुनियो इती ॥ १० ॥

एकाक्षर ।

चंपापुर धानं, एंव कल्पानं सुरनरस्वगचंदत सचही ।

हं पूज्ं ध्याऊं गुणगण गाऊं वासपूज्य दे सिव अचही ॥ ११ ॥

ओ दी ध्यासासूर्यचिन्हप्राप मार्ग निर्वासीति स्वाहा ।

एहि ध्यासासूर्यचिन्हप्राप स्वाहा ।

अथ श्रीविमलनाथजिनपूजा ।

ਰੋਜ਼ਾ ਓਂਦ ।

परम सखी तनी विवेकी जानी ध्यानी ।

प्राणी हित उपदेश देय मिथ्यात जगानी ।

सिद्धमुखमोगी विपल पाप बंदु जुग करके,  
॥ ३ ॥

अह्वानन विधि करुं त्रिविध त्रिप्रकार उचरिरे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अग्रभूता अवतार ! सर्वोपद्र !

ॐ श्री श्रीविष्णुनाथजिनेन्द्र अग्र लिष्ट लिष्ट । टाः टाः ।

आर्द्रा आप्नकनाथ। अर्द्ध आनन्द  
आं ध्यां श्रान्तिमस्तु। अन्तर्महत्त्वम् । अण्डम् ।

सुतविरुचिः ।

विमल सीतल सजल सुधारया, जनम मृत्यु जरा छय कारया ।  
सकल सौख्य विधान कनायकं, परिजने विमलं चरणान्नकं । ११



ओं श्रीं श्रीविपलनाथत्रिनेद्राय नमःपुन्यविनायकाय जलं निर्वणामीति स्वाहा ।

अथ कृष्ण कपूर सुकुंकुमं रिणित भृंगवटावालि गंधना ।

आखिल दुःख भवादिकनाशनं । परिजजे विमलं चरणान्नकं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथत्रिनेद्राय संतानावचिनायनाथ चंदनं निर्वणामीति स्वाहा ।

अछित उज्जल खंडन तीक्ष्णं । लसत चंद्र समान मनोहरं ॥

विगत दुःख सुधान सुदायकं । परिजजे विमलं चरणान्नकं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीविपलनाथत्रिनेद्राय प्रथयदप्राप्तये भक्षनं निर्वणामीति स्वाहा ।

कल्प वृक्ष भवेन सुगंधन । कुसुम चारु हरौ चोत्सु पावनं ॥

प्रबलबाण मनोद्भव नाशनं । परिजजे विमलं चरणान्नकं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीविपलनाथत्रिनेद्राय कायबाणविध्वंसनाय पुष्टं निर्वणामीति स्वाहा ।

सरस मोदक भिष्ट मनोहरं । सुभग कांचन पात्र सुधापितं ॥

असम दुःख हृषादिविध्वंसनं । परिजजे विमलं चरणान्नकं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीविनयनारथत्रिनेद्राय क्षुधारोपविनायनाथ नैवेद्यं निर्वणामीति स्वाहा ।

मणि उद्योत महातम नाशनं । लसत दीप सुश्रांचन पात्रकं ॥

अविल मोह विध्वंसन कारणं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकाविनाशनाथ दीपं निर्धामीति स्वाहा ।

अगर चंद्रनं धूप सुगंधिना । मधुप कोटि रवंत दिगालयं ॥

अशुभ कर्म महा दुष्ट जारनं । गरिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाथ धूपं निर्धामीति स्वाहा ।

सुपकमिष्ट रसामृत पावनं । सुभग श्रीफल आदि फलौषकं ॥

परम मोक्ष महाफल दायकं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मांशुकदमाक्षये फलं निर्धामीति स्वाहा ।

मलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं । चरु सुदीप सुधूप फलौषकं ॥

परम मुक्ति सुधान विधायकं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं । ९ ।

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मन्त्रधूपदमाक्षये अर्थं निर्धामीति स्वाहा ।

दयामादे उर भवतरे, सहसरारतें आय ।

दशमी जेठ असेत ही, जजिहूं हरप उपाय ॥ १ ॥

श्री ॥ वदेष्टुष्णदशायां गर्भहत्यायाय श्रौविषकनाथजिनेन्द्राय नमः ॥

माप सुकृतिथ चौधिको, जनमें सुरपति आय ।

सुर भिरि सनपन करि जजे, में जजिहूं गुण गाय । २ ।

श्री ॥ पावगुणलक्षणभ्यां कर्मभंगलभेदितया श्रौविषकनाथजिनेन्द्राय नमः ॥

तज्यो राज कंपिला पुरी, श्रीजिनवर वन जाय ।

चौथि मान सित तप भारथी, जजिहूं तूर वजाय ॥ ३

श्री ॥ सायशुक्लचतुर्थां घरोपगतवंदिनाय श्रौविषकनाथजिनेन्द्राय नमः ॥

माघ शुक्ल षष्ठी विषे, हुने धातिपा जान ।

फहो। घपे केवल भये, जजहुं सानकल्यान ॥ ४ ॥



ओं ह्रीं पापशुद्धयः प्रानमंनमंति तत्र श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्भयमीति०  
 अष्टमि साढ असेत ही, हने अवाति दियथान ।  
 गये विमल सुर नर जजे, जाजि हूं मोक्ष करुथान ॥  
 ओं ह्रीं प्रापादृष्ट्याष्टम्यां पोषयत्पाणमंति तत्र श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला ।

पंथा ।

विमल विमल मति दीजिये, हं करुणापनि मोहि ।  
 करूं वीनती जोरि कर, नमूं नमूं पद तोहि ॥ १ ॥

( अरो जगत्त मुष्ट देवकी चाल )

अहो विमल जिन देव, सुनिज्यो अरज हमारी ।  
 हृद संसार मझारि, और न सरनि निहारी ॥ १ ॥

सुनिष हरि हर देव, काल सबै ही खाये ।

उनको सरनो कौन, आपुनहीं धिर धाये ॥ २ ॥

तुम निरभे ताजि मोह, ध्यान शुक्ल मनु धायो ।

उपन्यो केवल ज्ञान, लोकालोक लखायो ॥ ३ ॥

समवसरनकी भूति, दोष पातैं लखि भागो ।

सुपनन तोटिग धाय, असुरनके संग लागे ॥ ४ ॥

धरो जनम नहिं फेरि, मरन नहिं निद्रा नासो ।

रोग नाहिं नहिं द्योक, मोहकी तोरी फांसो ॥ ५ ॥

विरमयको नहिं लेय, धीर भयप्रकृति विदारी ।

जग नाहिं नहिं स्वेद, पसेव न चित्ता दारी ॥ ६ ॥

मद नारी नहिं वैर, विषय नहिं रति नहिं कातैं ।

धास हनी रनि भूख, अष्टदश दोष न पातैं ॥ ७ ॥

नमूं सीस धरि द्वाष, रूपात देवनकें देवा ।

छयालीस गुण भंडार. करूं प्रभु तेरी सेवा ॥ ८ ॥

नमूं दिगंबर रूप, नमूं लखि निश्चल आसन ।

मुद्रा शांति निहारि, नमूं नामि हूं तुम शासन ॥ ९ ॥

नमूं कृपानिधि तोहि, नमूं जगकरता ये हो ।

असरन कूं तुम सरन, हरो भवकें दुख ये हो ॥ १० ॥

जामन मरन वियोग, सोग हरपादि घनेरे ।

फेरिन आवें निकट, करो प्रभु ऐसी मेरे ॥ ११ ॥

तुम लखि दीन दयाल, सरनि हम यातें आये ।

ऐसे देव निहारि, भागितें तुम प्रभु पाये ॥ १२ ॥

“रामचंद” कर जोरि, अरज करि है जिन ऐसी ।

विपति यहै जग मांहि, सर्वै तुम जानत तैसी ॥ १३ ॥

પાતેં કહની નાંદિં, હરો જિન સાહિવ મેરે ।

વિન કારન જગ વંધુ, તુહી અનમતલવ કેરે ॥ ૧૪ ॥

સરન ગહેકીં લાજ, રાસિ જગપતિ જિન સ્વામો ।

કરુણા કરિ સંસાર, વિમલ જિન અંતર જામી ॥ ૧૫ ॥

દોહા-વિનતી વિમલ જિનેશકી, જો પઢિસી મન લાય ।

જનમ જનમકે પાપ સવ, તતલિન જાપ પલાય ॥ ૧૬ ॥

બો દ્રો બીધિપતનાયજિર્નેદ્રાપ વહારે નિર્વધામીતિ સ્વાદા ।

અથ વિમલનાથવિનપૂઆ સમાદા ।

અથ શ્રીઅનંતનાથજિનપૂજા ।

અર્ચન ।

વાસિ અભ્યંતર ત્યાગિ પરિબ્રહ્મ જાતિ ભયે ।

બહુજન દિલ શિવપંથ દિસ્યાયો દરિ નયે ॥

ऐसे अनंत जिनेश, पाप नमि हूं सदा ।

आह्वानविधि करूं त्रिविध करिकें मुदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीं धनंताय नमो नन्द । अथ अक्षर अथ नर । सर्वोपद्र ।

ओं ह्रीं श्रीं धनंताय नमो नन्द । अथ त्रिष्टुप् त्रिष्टु । दः दः ।

ओं ह्रीं श्रीं धनंताय नमो नन्द । अथ मय सप्तहिंसे भय मय । पपद्र ।

नाराय षेद्र ।

क्षीर नीर हीर गौर सोम क्षीत धारया,

मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया ॥

अनंतनाथ पाप सेव मोक्ष सौख्य दाय है ।

अनंत काल श्रमज्वाल पूजोर्त नभाय है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीं धनंताय नमो नन्द । अथ मय सप्तहिंसे भय मय । पपद्र ।

कुंक्रमादि चंदनादि गंध क्षीत कारया ।

संभवेन अंतर्केन भूरि ताप हारया ॥ अनंतनाथ ॥

प्रो ॥ श्रीअनंतनाथत्रिनेन्द्राय संसारपापविनाशनाथ चंद्रनं निर्वाणमीति स्वाहा ।

स्वतेहंदु कुंद हार खंड ना अखिचही ।

दुर्ति खंडकार पुंज धारिये पविच ही ॥ अनंतनाथ० ॥

प्रो ॥ श्रीप्रनंतनाथत्रिनेन्द्रायाधृषणमहाप्रसादात् निर्वाणमीति स्वाहा ।  
सरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण लयावही ।

गंध लुब्ध भृंगचूंद जव्द धारि आव ही ॥ अनंतनाथ० ॥

प्रो ॥ श्रीअनंतनाथत्रिनेन्द्राय कामवाद्यविष्वक्कामाय पुष्पं निर्वणामीति स्वाहा ।  
मोदकादि घेवरदि मिष्ट स्वादसार ही ।

हेम घाल धारि भव्य दुष्ट भूख टारही ॥ अनंतनाथ० ॥

प्रो ॥ श्रीप्रनंतनाथत्रिनेन्द्राय क्षुधातोष धनंदाय नैवेद्यं निर्वणामीति स्वाहा ।  
रत्न दीप तेज मानं हेमपात्र धारिये ।

भवांधकार दुःखभार मूलते निवारिये ॥ अनंतनाथ० ॥

प्रो ॥ श्रीअनंतनाथत्रिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाथ दीपं निर्वणामीति स्वाहा ।

देवदारु कृष्ण तार चंद्रनादि लपावही ।

दक्षीण धूप धूम्रगंध भृंगचुंद धाव ही ॥ अनंतनाथ० ॥

ॐ ई श्रीशंभुनाथजिनेन्द्राय कृच्छ्रमर्त्यदनाय भूष निर्णयपीति स्वाहा ।

श्रीफलादि खारिकादि हेमथालमें भरे ।

मूढ पिष्ट गंधसार चकिल नासिका हरे ॥ अनंत नाथ० ॥

भो ई श्रीशंभुनाथजिनेन्द्राय भोक्षकप्रसाधये फल निर्णयपीति स्वाहा ।

द्वयम् ।

मलिल क्षीत क्षति स्वच्छ पिष्ट चदन मलियागर ।

तंदुल सोम समान पुष्प सुरतरुके ला वर ॥

चरु उत्तम अति पिष्ट पुष्ट रसना मनभावन ।

गणि दीपक तमहरन धूप कुलनागर पावन ॥

लहि फल उत्तम कण्ठशाल भरे, अरघ रामचंद्र हृम करें ।





धो श्री जेष्टुष्णदादयः। तथोमंगर मंदिताय श्रीभक्तगतायजिनेन्द्राय अर्पे नि० ।

दैत अमावसि अरि हने, घातिकर्म दुखदाय ।

व ह्यो धर्मकैवल्लि भये, जजुं चरण मुखदाय ॥ ४ ॥

ओ ह धेष्टुष्णपादयः। शान्तगर्भदिवाय श्रीभक्तगतायजिनेन्द्राय अर्पे नि० ।

दैतअमावसि शिव गये, हनि अघाति भगवान् ।

सुरनरखगपति मिलि जने, जजहुं मोक्षकल्याण ॥ ५ ॥

ओ ह धेष्टुष्णपादयः। मोक्षगर्भदिवाय श्रीभक्तगतायजिनेन्द्राय अर्पे नि०

अथ जयमाला ।

श्लो० ।

काल अनंतानंत भय, जीव अनंतानंत ।

जिन उत्पत्ति दयय भुव कही, नम्रुन्त भगवंत ॥ १ ॥

મણિ વિષ્ણિ અલ્પ કરિ સુગળ પેસિકેં જો ॥ ૭ ॥  
 ઘરિ ધ્યાન સુકલ તવજો, ચત્ર ઘાનિ રૂને જવ મો,

સુર આપ મિલે સત્ર જ્ઞાન કલ્યાણહો જી ।  
 વદિ ચૈત અમાવાસિજો, જાણિ માર્તિકિ તુહે વાસિજી,

સમવાદિ રત્નો તસુ ઉપમા મો નહોં જી ।  
 સમગાદિ જિતે મવિજો, સુનિ ધર્મ તિરે સવ જી,

મમુ આયુ રહો જવ માસ તર્ણો તવે જી ।  
 સંબદ પધારે જી, સવ જોગ સંધારે જી ॥

સમભાવ વિધારિ વરી શિવતિપ જવેંજી ॥ ૯ ॥  
 વસુ મુળ જુત મૂર્ધિતજી, મત્ર હારિ વસે તિતજી,

સુલ મગન મેપે જિત માવસ ચૈતકીજી ।  
 સુર સવ મિલિ આપેજો, શિવ મંગલ માપેજી,

વહુ પુણ્ય તપાપ ચલે તુમ મુળત કીજી ॥ ૧૦ ॥

गुण वृंद तुम्हारे जी, बुध कौन उचारे जी,

गण देव निहारै पे वचना कहै जी ।

“नंदराम” कौं श्रुतिजी, वसु अंगथकी नुतिजी, ॥ ११ ॥

गुण पुरान द्यौं मति गर्भ तुहे लहै जी ॥ १२ ॥

प्रभु अरज हमारीजी, मुनिउयो सुख कारीजी,

भवमे दुखभारी निवारो ॥ धर्माजी ।

तुम सरन महाहंजी, जगके सुख दाहंजी ॥ १३ ॥

शिवदे पितुमाहं कह्यो कबलों धर्माजी ॥ १४ ॥

ब्रह्मा वंश ।

हनि गुण गण मारं, अपल अपारं, जिन अनंत के हिय धरहै ॥ १५ ॥

दनि जरमरणावलि, नाभिभवानलि । निवमुंदरि तन छिन वरहै ॥ १६ ॥

जो दां श्रीअनंतनाथजेंद्राय मरार्थ निर्वपापीति स्वाहा ।

मणि त्रिपिट अखय करि सुगण पेशिकें जी ॥ ७ ॥  
घरि ध्यान सुकल तवजी, चउ घानि इने जव नीं ,

सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण हो जी ।

वदि चैत अमावासिजी, जसि भक्ति तुहे वासिजी,

समवादि रङ्गो तसु उपमा भी नही जी ।

समभादि जिते भवित्री, सुनि धर्म तिरे सब जी,

प्रभु आयु रही जब मास तर्णी तवै जी ।

संभेद पधारे जी, सब जोग संघारे जी ॥

समभाव विधारि वरी शिवतिय जवैजी ॥ ९ ॥

वसु गुण जुत भूपितजी, भव छारि वसे तितजी,

सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी ।

सुर सब मिलि ओपेजी, शिव मंगल गायेजी,

बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणत कीजी ॥ १० ॥

गुण चंद्र तुम्हारे जी, बुध कौन उन्हारे जी,  
गण देव निहारे पै वचना कहे जी ।

“चंदराम” करै श्रुतिजी, बसु अंगथकी नुतिजी,

गुण पूरन द्यौ मति गर्भ तुहे लहैजी ॥ ११ ॥

प्रभु अरज हमारीजी, सुनिज्यो सुख कारीजी,

भवमें दुखभारी निवारो रौ धणीजी ।

तुम सरन सदाहंजी, जगके सुख दाहंजी ।

शिवदे पितुमाहं कहो कबलों धणीजी ॥ १२ ॥

पछा छंद ।

इति गुण गण सारं, अमल अपारं, जिन अनंत के हिय धरहै ।

इति जरमरणावालि, नायिभवावालि । निवसुंदरि तत छिन वरहै ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं श्रीभक्तनाथजिनेंद्राय नमः सर्व निर्वेषाभीति स्वाहा ।

# अथ श्रीधर्मनाथजिनपूजा ।

राजाक्षर ।

सार द्राव षट् कहे पदाराथ नव सुभ भाखे ।

सत्त तरव वरनये काप पंचासति आखे ॥

लोहर्तीन धिति कही धर्मजिनवर वृषदायक ।

आह्वानन विधि करुं प्रणमि त्रिविधा शिवनायक ॥१॥

को ॥ धांपर्वाथनिवेन्द्र मय करगर कथवर । संशोद ॥

को ॥ धोषर्वाथनिवेन्द्र मय ठिखु ठिखु । ठः ठः ।

भो ही धोषर्वाथनिवेन्द्र अय मय सः नैरिहो मय मय । वः ॥

मो मय कथजिख कथेय मर ।

भलि निर्मल शुचि नीर तीर्थ वद्धव भटंग पारे ।

सीतल पिधित मंष सुरभिते मय्य संकरे ॥

जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद्र दुख खंडन ।  
जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद्र दुख खंडन ॥ २ ॥

जजुं चरण धरि भक्ति धर्म जिन सिय के मंडन ।  
जजुं चरण धरि भक्ति धर्म जिन सिय के मंडन ॥

ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युधिनान्नाप जलं निर्वधामीति स्वाहा ।  
ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युधिनान्नाप जलं निर्वधामीति स्वाहा ।

कुरुनागर कसमीरनीर धनसार सुचंदन ।  
कुरुनागर कसमीरनीर धनसार सुचंदन ॥ २ ॥

पटपद औष भमंत सुरभिर्ते दाह निकंदन जनप ॥ २ ॥  
पटपद औष भमंत सुरभिर्ते दाह निकंदन जनप ॥ २ ॥

ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाप चंद्रवं निर्वधामीति स्वाहा ।  
ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाप चंद्रवं निर्वधामीति स्वाहा ।

सोम किरण समस्वेत सुद्ध डंडीर अखंडित ।  
सोम किरण समस्वेत सुद्ध डंडीर अखंडित ॥ जनम ॥ ३ ॥

अति निर्मल चखि हरै, सालि सुभ सौरभि मंडित ॥ जनम ॥ ३ ॥  
अति निर्मल चखि हरै, सालि सुभ सौरभि मंडित ॥ जनम ॥ ३ ॥

ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदमाप्तये कृष्णान् निर्वधामीति स्वाहा ।  
ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदमाप्तये कृष्णान् निर्वधामीति स्वाहा ।

पंथ वर्ण मय कुसुम कल्प तरुके मन भावै ।  
पंथ वर्ण मय कुसुम कल्प तरुके मन भावै ॥ जनममृत्यु ॥ ४ ॥

भंष लुब्ध मधु भोम समरके बाण नसावै ॥ जनममृत्यु ॥ ४ ॥  
भंष लुब्ध मधु भोम समरके बाण नसावै ॥ जनममृत्यु ॥ ४ ॥

ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय शुभं निर्वधामीति स्वाहा ।  
ओ ६ श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय शुभं निर्वधामीति स्वाहा ।

उज्जल ललित पवित कनक भाजन चरु धारै ।  
उज्जल ललित पवित कनक भाजन चरु धारै ॥

मधुर घृत रस युक्त छुधा लसतै निरवारै । जनममृत्यु ॥ ५ ॥  
 ओं श्री श्रधर्मनाथजिनेद्राथ जुधारोगविनाथनाथ नैवेद्यं निर्वाणमीति स्वाहा ।  
 मणिमय निर्मित दीप कांति तम औष विदारै ।

विकसत है वरधांध स्वपर लखि गुण विस्तारै ॥ जनममृत्यु ॥ ६ ॥  
 ओं श्री श्रधर्मनाथजिनेद्राथ मोहांधारविनाथनाथ क्षीयं निर्वाणमीति स्वाहा ॥

अगर कृसन करपूर सुरभि चंदनके दाहन ।  
 धूप निर्जरा करै हरे अघ है शिव गाहन ॥ जनममृत्यु ॥ ७ ॥  
 ओं श्री श्रधर्मनाथजिनेद्राथ अघकर्मदहनार्थ पूं निर्वाणमीति स्वाहा ।

सुर तरुके फल भूरि कनक भाजन भरि पावन ।  
 श्रीफल मिष्ट वदाम चक्षुनासामनभावन ॥ जनममृत्यु ॥ ८ ॥  
 ओं श्री श्रधर्मनाथजिनेद्राथ मोक्षकउग्रामये कत्र निर्वाणमीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूप मिलवै ।  
 अर्घ्य 'रामचंद' करै मेलि फल शिवसुख पावै ॥



जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद्र दुख स्वल्पं ।  
जजुं चरण धीरे यत्किं धर्मं जिन शिष्यके मंडन ॥ १ ॥

श्रीं श्री धीर्यमनायजिनेन्द्राय नमः ।  
अथ पंचकटप्राणक ।

श्रीं ।

सर्वारथ सिधितं त्रये, गर्भे सुव्रता सार ।

तेरसि पित्त वैद्याखकी, लभो जजुं भवतार ॥ १ ॥  
अर्थ ति० ॥

श्रीं श्री पंचावगुणप्रयोगद्वया गभंगलमंडिताय धीर्यमनायजिनेन्द्राय नमः ।

जनम माप मुदि ओरद्री, सुरपति लखि हत आप ।

सुरगिरि ले सनपनि जजुं, मे जजुं गुण गाय ॥ २ ॥  
अर्थ ति० ॥

श्रीं श्री मापगुणप्रयोगद्वया जनापलमंडिताय धीर्यमनायजिनेन्द्राय नमः ।

माप सुव्रत तेरसि तजयो, तृणवत राज मदान ।

धर तप धन धैर्ये, जज्जं पमं भगवान् ॥ ३ ॥

श्री श्री साधुसत्तमसोदरां तपोमलभरिताप धर्ममेत व विदेशाय नमः ॥  
योप सुवल् पूजिम हने, धानि कर्म लहि ज्ञान ।

कटी सकल धिनि लोककी, जज्जं चोप कल्याण ॥ ४ ॥

श्री श्री साधुसत्तमसोदरां तपोमलभरिताप धर्ममेत व विदेशाय नमः ॥

जेष्ठ सुकल निधि चोपि ही, हनि भयानि शिवधान ।  
गये समेदावल पही, जज्जं मोक्ष कल्याण ॥ ५ ॥

श्री श्री साधुसत्तमसोदरां तपोमलभरिताप धर्ममेत व विदेशाय नमः ॥

अथ जयमाला ।

देवा ।

पद धी जिनपमके, पदनसुपंदन भान ।

ममता-जनी-दरन दिन, भवदधि तारन जान ॥ १ ॥

सर्वारथिधिधत्ते अहिभिंद, चप रतनागपूरी गुणवृंद ।

पिता भानु गुणवंत अपार, मात सुव्रता गर्भ पद्मारि ॥ २ ॥

आये मित त्रैरसि वैसाख, नये मुकट हरिधरि अभिलाख ।

चले सर्वे सुर जुतपरिवार, गर्भकल्पाणक कीर्त्तौ सार ॥ ३ ॥

पट नव मास धर्की मणिबिंद, वार तीन दिन माहीं सुष्ट ।

करी धनद, सुरि छापन पाय, सेवै माताकें सुखदाय ॥ ४ ॥

जनम माघ सुदि तैरसि भयो, तीन ज्ञानजुत अचरज धयो ।

वाजें धंट सुमनकी बिंद, इंद्र चले सब जुति करि हृष्ट ॥ ५ ॥

माया शिशु धरि दाची जिनंद, प्रदहिन दे लीने सानंद ।

वासव नमि लीने हरपाय, चले मेरु पांडुक वन जाय ॥ ६ ॥

छीरोदधितें जल सुभ लाय, सनपन करि भवमंगल गाय ।

वाजें साढा वार। कोरि, जाति धुनै करि नृप चहोरि ॥ ७ ॥

पूजि पदांजुज धितु परलाय, तांङव निरत कियो सुरराय ।

धर्मनाथ कटि निजपल गये, बाल चंद्रसम बढते भये ॥ ८ ॥

तन कंचन धनु पन चालीस, आयु वरप लख दसकी हैस ।

पांच लाख भप कीनो राज, कहु कारन लखि धर्मजिहाज ॥ ९ ॥

तुणवत रमारयो भावन भाय, देव रिषी नय पूजे पाय ।

ओर सुरासुर लग अवनीस, सिवका ले थापे वन हैस ॥ १० ॥

कवलौचत उपजयो मनज्ञान, पष्टम धरि तिष्टे भगवान ।

तेरसि माषसुकल सुरराय, करायो करपाणक तप सुखदाय ॥ ११ ॥

वदमानपुर भोजन काज, गये दयो पय धर्मजिहाज ।

कोटि अर्घदादस मणि धार, भई चिष्टि धरसेनि अगार ॥ १२ ॥

वरस एक तप दुर्दर धारि, पुनिम पोस द्यान परजारि ।

भरम धातिपा कर वरचोर, केवल ज्ञान जपायो धीर ॥ १३ ॥

नरम अट्ठहिलख उपदेस, भविजन भवत तारि अण ॥ १४ ॥

मप पाप दक आय जु रद्दी, गिरसपेद पहुंचे प्रभु सद्दी ॥ १५ ॥

जोगनिरोधि करे सप्रभाव, दानि अघाति भये सियराव ॥ १५ ॥

चतुर्निकाय देवता आय, उरस्य कीर्त्तो मंगल गाय ॥ १५ ॥

मो मंगल दे जिनपति मोहि, जोरि उभे कर विनवूं तोहि ॥ १६ ॥

जे नर अन्नर लोकत्रिपमाहि । तुमर्ते परनति छानी नाहि ॥ १६ ॥

योनि पोपनकी सब वात । दो त्रिभुवनपति कर विख्यात ॥ ७ ॥

“रामचंद” विनवें प्रभु तोहि । धर्मनाथ जिन दे शिव मोहि ॥ ७ ॥

पछा धं ।

इनि श्रीजिनधर्मं गुणगणपरमं जोभवि मनवचतन गावें ।

लहि गुर सुखसारं अमल अपारं नर हुय मित्र सुख लहु पावें ॥ १८ ॥

ओं श्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः ॥ १५ ॥

एति धर्मनाथभिनपूजा समाप्ता ॥ १५ ॥

सुष्ट मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही ॥ रोग सोम ॥ ५ ॥  
 यों ही शोधातिनाथजिनेद्राय जुषारोगविनाशनाथ नेवेद्यं निर्वयामीति स्वाहा ।  
 दीप ज्योतिको उद्योत धूम होत ना कदा ।

रत्नथाल धारि भव्य मोहध्यांत द्वे विदा ॥ रोग सोम ॥ ६ ॥  
 यों ही शोधातिनाथजिनेद्राय मोहधकारविनाशनाथ दीपं निर्वयामीति स्वाहा ।  
 अम्र चंदनादि द्रव्य सार सर्व धार ही ।

स्वर्ण धूप दानमें हुतास संग जार ही ॥ रोग सोम ॥ ७ ॥  
 यों ही भीष्मातिनाथजिनेद्राय अष्टकर्मदनाथ धूपं निर्वायामीति स्वाहा ।  
 दोटकेन श्रीफलेन हेमथालमें भरे ।

जिनेसक गुणोंपि गाप सर्व ऐनकुं हरे ॥ रोग ० ॥ ८ ॥  
 ओं ही शोधातिनाथजिनेद्राय मोक्षकफप्राप्ते कृतं निर्वायामीति स्वाहा ।

स्वपथ ।

सरद हं दुसम अंभुतीर्षं उदुभव तुटटासी ।

१ पाप ।

चंदन दाह निकंद मालि क्षपितं दुति भार ।

सुर तरुके वर कुमुद मधु चरु पावन धार ।

दीप रत्नमय जोति धूर्तं मधु क्षंभारं ॥

लहि कल उच्चग अरध करि सुम "रागचंद" कन धाल मरि ।

श्रीक्षान्तिनाथके चरण जुग वसु निधि अरत्रे भाव धरि ॥ ९ ॥

श्री श्री श्रीक्षान्तिनाथजिनेन्द्राय अनन्यपदप्रसादं अयं निर्गम्यति रम्यम् ।

अथ पंच कल्याणकः ।

दोहा ।

सर्वार्थ मिषितं चपे, भाद्रव मसिपि रम्यम् ।

पिरादि उर अवतरे जजुं गर्भे अभिराम ॥ १ ॥

श्री श्री भाद्रपदकल्पासाम्पादं नमोऽगम्यदिन्याय श्रीक्षान्तिनाथजिनेन्द्राय अयं निर्गम्यति ॥

जेट चतुरदसि कृत्स्नदी, जनमे श्रीभगवान् ।

१५१

सनपन करि सुरपति जजे, मैं जज हूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं ष्येष्टकृष्णचतुर्दश्यां जन्मपंगकपंहिताय श्रीशक्तिनाथत्रिनेद्राय अर्धं नि० ॥

जेठ असिन चउदसि वरथौ, तप तजि राज महान ।

सुर नर खगपति पद जजैं, मैं जज हूं भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं जेष्टकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंहिताय श्रीशक्तिनाथत्रिनेद्राय अर्धं निर्देशमीति०  
पोस सुकल गपारसि देने, पानि कर्म दुखदाय ।

केवल लहि घृष भासियौ, जजूं शान्ति पद पयाय ॥ ४ ॥

ओं श्री गोपगुप्तैकादश्यां शानमंगलमंहिताय श्रीशक्तिनाथत्रिनेद्राय अर्धं नि० ।

कुरुन चतुरदसि जेठकी, हनि अघानि सिवधान ।

गपे समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं श्री वदेष्टकृष्णचतुर्दश्यां योगमंगलमंहिताय श्रीशक्तिनाथत्रिनेद्राय अर्धं निर्देश० ॥



अथ जयपाला ।

गोरदा ।

प्रायतं ।

जाति जिनेस्वर पाप, बंद मन वच पायतं ॥ १ ॥  
जाति जिनेराय, उपां विनती कथिमां करो ॥ २ ॥

देष्टु सुगति जिनराय, उपां विनती कथिमां करो ॥ ३ ॥

नाम-धारा साधिकां पारं शीलौ ।

जाति काम वसुधाधिके, आन यदे सुखदाय ॥

मानि करो मय लोकर्म, आन यदे सुखदाय ॥

साति करो जगदातिजी ॥ १ ॥  
साति करो जगदातिजी ॥ २ ॥

धन्य नयारि दयनापुरी, धन्य पिता विश्वसेन ।  
धन्य उदर अपरा सती, साति भये सुख देन ॥ साति ॥ ३ ॥

भादव सप्तमि रूपावती, नर्मकल्याणक ठानि ।  
रतन धनद वरपादये, पट नव भास महान ॥ साति ॥ ३ ॥

जेठ अभित चउदस विषे, जनम कल्याणक हंद ।

मेरु करचो अभिषेकके, पूजि नचे सुरवुंद ॥ सांति० ॥ ४ ॥

हेम वरन तन सोहनो, तुंग धनुष, चालीस ।

आमुवरसल्लख नरपती, सेवत सहस वगीस ॥ सांति० ॥ ५ ॥

पटखंड नवनिधि त्रिपसवै, चउदहरन्नन भंडार ।

बहुकारण लखिकें तजे, पणचव अभिय अगार ॥ सांति० ॥ ६ ॥

देव रिषी सव आयकें, पुनि चले जिन बोधि ।

लेप सुरा सिवका परी, विरछ नंदोरिवर सोधि ॥ सांति० ॥ ७ ॥

हुण चतुरदसि जेठकी, मनपरजै लहि ज्ञान ।

हंद कल्याणक तप करचो, प्यान परचो भगवान ॥ सांति० ८ ॥

पष्टम करि दित असनके, पुर सोमनस मसार ।

गणे द्यो पय पिचजी, वरषे रतन अपार ॥ सांति० ॥ ९ ॥

मोनमदिन वसु दुगुणही, वरम करे तप ध्यान ।  
 योग सुरुच्य ग्यारसिहने, घाति लह्यो प्रभुज्ञान ॥ सांति० ॥ १० ॥  
 ममवसरन धनपाति रज्यो, कमलासनपर देव ।  
 इंद्र नरा पट्टव्यक्ती, मुनि धिनि श्रुति करि एव ॥ सांति० ॥ ११ ॥  
 धन्य जुगलपद मोतनो, आयो तुम दरवार ।  
 धन्य उभे चसि ये भये, वदन जिनंद निहारि ॥ सांति० ॥ १२ ॥  
 आज सकल कर ये भये, पूजन श्रीजिन पाय ।  
 भीम मफल अवही भयो, धोवयो तुम प्रभु आय ॥ सांति० ॥ १३ ॥  
 आज सकल रसना भई, तुम गुणगान करंत ।  
 धन्य भयो दिप मो तनो, प्रभुपदध्यान धरंत ॥ सांति० ॥ १४ ॥  
 आज सकल जुग मो तनो, श्रवन मुनत तुमवेन ।  
 धन्य भये धसु अंग ये, नभत लयो अनि चैन ॥ सांति० ॥ १५ ॥

राम करै तुम गुणतणा, हँद लैह नदी पार ।

मँ मनि अल्प अमान हूँ, होय नदी बिसतार ॥ सांति० ॥ १६ ॥

प। ५ सरस पर्वीसदी, पोटस कम उपदेस ।

देय समंद यथारिपे, मास रहै एक सेस ॥ सांति० ॥ १७ ॥

जेट असिन चउदसिगपे, दनि अपाति सिवयान ।

सुरपनि उरसव अति करे, मंगल मोलि करपान ॥ सांति० ॥ १८ ॥

मेवक अरज करै सुनो, हो करुणानिधि देव ।

दुगमप भवदधि तँ मुँसै, तारि करुं तुम सेव ॥ सांति० ॥ १९ ॥

पद्या संर ।

दनि जिन गुणपाला, अमल रसाला जो भविजन कैठै घरहँ ।

हुय दिवि अमरसर, पुदपि नरेसर, शिवसुंदरि ततालिन चरहँ ॥

ओं ह्रीं ध्यानविनाय चित्रेशाय पूषार्थ निर्देशमर्तति रघुना ॥

॥ ३ ध्याः लाः विनायचित्रेशाय पूषार्थ निर्देशमर्तति रघुना ॥ १६ ॥

# अथ श्रीकुंभनाथ जिनपूजा ।

अद्विष्ट ।

जे परसंसा करै राग तासौ नदी, करै विरोध न दुष्टधकी दुख ना कही ।  
सुद्धात्ममे लोन कुंभु जिनकुं नमं, आह्वान विधि ठानि सर्वे अवकुं वमं ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंभनाथजिनेंद्र चम्र अवतर अचम्र । संशोषद् ।

ओं ह्रीं श्रीकुंभनाथजिनेंद्र । अथ तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीकुंभनाथजिनेंद्र । अथ मय सज्जि हितो भव मय । वषद् ।

प्रियंगु छंद ।

अति आसय दुसतरतै तृद् धावै, दुख पावै अतिही भारी ।  
तिसनासन कारन पूजन आयो, तीरथको जल भरि झारी ॥  
श्रीकुंभु जिनेंद्रवर आपनसे चर, लखि पोषे पद् धारि करुना ।  
मैं काल अनंत अकाज शुभायो, अव तारौं तुम पद् सरना ॥ १ ॥  
ओं ह्रीं श्रीकुंभनाथजिनेंद्राय नमःप्रत्युचिनाग्रनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवगाढत धमर्ते दाह भयो मुह्य, छिनमुख नादां का चरना ।

पसि कुंकुम चंदन दाह निरंदन, पूजन त्यायो हरि सरना ॥ श्री कुंभु०

श्री १। धं दुं पुना धि नो द्राप संसारार्थाद भयनाप चंदनं निर्वाप्नोति स्यात् ॥

हृद भंसार अपार उदधिर्द्रुं, तारन भाक्ते तुर्हा नवका ।

मिन तंदल त्यावै पुंज यनावै लहु पावै ते मुख सिवका ॥ श्री कुंभु० ॥

श्री १। धं दुं पुना धि नो द्राप प्रलयपरमाप्तये प्रसन्नं निर्वाप्नोति स्यात् ॥

सुर असुर विद्याधर हरिहर प्रतिहर, भला भष्ट मदन कीने ।

सुरनरकं कुसुमयभी पद पूजं, दरो समर हन दुख दीने ॥ श्री कुंभु० ॥

श्री १। पृथु भवक्षि नो द्राप कृपयात्परिबंष्टनाप दुष्णं निर्वाप्नोति स्यात् ॥

दोष आठारा यातें दोवै, क्षुधा तृपाते ना नित स्वातें ।

सद पेवर भोदक पूजन त्यायो, दरो वेदना दुख यातें ॥ श्री कुंभु० ॥ ५॥

श्री १। धं दुं पुना धि नो द्राप क्षुधातोपविनाशाय वैवेवं निर्वाप्नोति स्यात् ॥

भोद मदातप लाप रखो मम, ज्ञान दार्यो अति दुख दीना ।



## अथ पंच कल्याणक ।

वोह ।

दसमो श्रावण कृस्नही, ताजि सरचारथ सिद्धि ।

गर्भ लपो श्रीमतिवदर , जजुं देहु सितरिद्धि ॥ १ ॥

ओ ॥ भावणदण्डदण्डगर्भ गर्भंगलसंधिवाप भोडुंगुनायजिनेद्राय अर्घ निर्देया० ।

प्रतिपद सित वैसाख ही, जनम सुराधिप जानि ।

उत्सव करि सुरगिरि जजे, मे जज हुं भव हानि ॥ २ ॥

ओ ॥ वैशाखदण्डप्रतिपदाया अन्धमंगलसंधिवाप भोडुंगुनायजिनेद्राय अर्घ नि० ॥

तज्यो राज पट खंडको, तृणवत दिच्छा धारि ।

परिवा सित वैशाखही, जजुं भवार्णव तारि ॥ ३ ॥

ओ ॥ वैशाखदण्डप्रतिपदाया अण्डमंगलसंधिवाप भोडुंगुनायजिनेद्राय अर्घ नि० ।

चैत सुकल त्रितिया हने, पाति करम लहि ज्ञान ॥



કલ્યા ધર્મ સુનિ શવિ તિરે, જજદું જ્ઞાનકલ્યાન ॥ ૪ ॥

ઓ દીર્ઘપ્રજાસહત્વીયાપાં જ્ઞાનમંગલમંદિતાપ શ્રીકુંડુનાથજિનેન્દ્રાપ ધર્મ નિર્ભયામીં ।

પટ્ટિયા સિત વૈશાસ દી, સકલ કર્મ દાનિ મોસિ ।

મયે સમેદાચલ ધર્મી, જહું ચરણ ગુણ ધોસિ ॥ ૫ ॥

ઓ દીર્ઘજાણહ્રમતિપદાપાં ગોષ્ઠમંગલમંદિતાપ ધર્મકુંડુનાથજિનેન્દ્રાપ અર્ધ નિં ।

અથ જયમાલા ।

યોશા ।

કુંદુ જિનેસ્વરકે ચરન, ત્રિવિધ નમું કર જોરિ ।

ધરિ દિચ્છા પદ કાપકું, પોસે પદ્મલુંહ છોરિ ॥ ૧ ॥

ચાક-પ્રિયુષન ગુરુ સ્વામીકી ।

જય કુંદુ જિનેસ્વરજી, વંદુ પરમેસ્વરજી, સરવારથ સિદ્ધધર્મી,  
ચપ આદ્યેજી । શ્રીમાતિ ઉર ધાંયંજી, નૃપ સ્વર્ધ સુદાએજી, વદિ શ્રાવ-

णदमर्षी मंगल गार्हप्यजी, ॥१॥ वारणपुर पानाजी, हरि जन्म करपा-  
 नाजी, मिलि आए वेंसाख सुकल परिवा सर्वेजी । सुरगिरि ले आपे  
 जी, जल छीर सुल्पायेजी, अभिषेक सिंगार करी पूजा सर्वेजी ॥ ३ ॥  
 फिर पितु दिगल्पायेजी, नाघितूर बजायेजी, लखि अंग न माये मात  
 पिता । सर्वेजी । तन कंचन सोहैजी, रवि कोटिक को है जी, धनुतुंग  
 पेनीस अजा लल्लन फरैजी ॥ ५ ॥ वय बाल विद्वार्हजी, नृप पदवी  
 पार्हजी, सुभवक हल्पादि भंडार विषे भयेजी । पट्ट खैंडके भूषाजी,  
 वनधार अनूयाजी, सुर संग मझारि हटपादि सबे जयेजी ॥ ७ ॥ नृप  
 मखर धाराजी, सर्वे पद साराजी, वचोस दज्जार तिया तियुणी लहो-  
 जी । कलु कारण पायोजी, भव चंचल भायोजी, नवनिधि सिंगार  
 विभो विषवन जही जी ॥ ६ ॥ लोकांतिक आपेजी, पद पुष्प चढाये  
 जी, नुति कर भुति ठानि संजोषि घरां गयेजी । सिवका हरि कीर्त्तनी

જો, મિલિ કાંધે લીનીજો, વન જાપ તિલક તરુ તાલિ ટપે જી ॥ ૭ ॥  
 મિંગાર ઉનારેજી, સિર કેસ ઉપારેજો, નપઃ સિદ્ધ ઉચારિ સુધાતપ ધ્યા-  
 દયાંત્રી । વેદ્યાશ્વ ઉજારેત્રી, પરિયા તપ ધારંત્રી, તવદી મન દ્વાન  
 જિનેન્દ્રપર પાદપોત્રી ॥ ૮ ॥ પટ્ટપ કરિ પૂરોત્રી, ધોત્રન દ્વિત સૂરોત્રી  
 પુર મંદિર ધોર લલ્લત ધૂપા ધેરેત્રી । ઘમદસ નિદારેત્રી, નપિ તિદ્ર  
 ત્રચારેત્રી, પપદાન સુરાં લલિ પંચાચર કરેત્રી ॥ ૯ ॥ પોદેસ વર્ષ તાર્દેત્રી  
 કરિ નપ અધિકાર્દેત્રી, આતપ લગ્નગાય દ્વને ચત્રધાતિયાત્રી । કેવલ  
 લલિ દ્વાનાંત્રી, ંલોત્રપ વલ્લાન્ત્રપોત્રી, મિતત્રીજ કલ્પાનોંત્રી ॥ ૧૦ ॥  
 ક્રિયોત્રી ॥ ૧૦ ॥ સવ આરજ વિદરેત્રી, ધવિતારિ ધેરેત્રી, સવ  
 આયુ ત્રિવેરિ સમંદાચલ ગયેત્રી । વૈપાશ્વસુ મતિપદત્રી, અધાતિ કરે  
 રદત્રી, તવ મોક્ષ મદાપદ કુંજુજિના ગયેત્રી ॥ ૧૧ ॥ શ્રીજિનવર  
 ત્ર્યાર્ગીત્રી, મુળપૂરન ધામીત્રી, ફરુના નિધિ નામી અરજ મુનો કલંત્રી ।  
 ધવવાસ મદાધનત્રી, દસમેં મુલ ના હિનત્રી, બિન કારન યે જન વેરકરે

दहंजी ॥ १२ ॥ तुम सरन सदाहंजी, विन कारन भाहंजी, हो त्रिभुवन  
राहं सरनि तुहे गहंजी । गुणगण सब धारेजी. "रामचंद उचारेजी,  
हरि चोर हमारे सोरूप सदा लहंजी ॥ १३ ॥

पद्या ।

गुणगण अविकारं भवदधि तारं कुंभु जिनेस्वरके अपलं ।  
सुर नर सग पावें सिवपद पावें, "रामचंद" पद जजि कमलं ॥

ओ री भंभुंभुभाषाजिनेद्राव पूर्णार्थ निर्णयार्थि रत्नार ।

एहि भंभुंभुभाषाजिनपूजा समखा ॥ १७ ॥

## अथ श्रीअरनाथाजिनपूजा ।

अदित ।

ताजे पट खंडभूरिद्ध जीर्ण तृणवत सेवे ।  
सुद्धातमर्षे लीन भये अरजिन जेवे ॥

ધ્યાનસહ્યર્થે દેને કરમ વસુ મં નમું ।

આદ્વાનન વિધિ ટાનિ સર્વે અઘકું વમું ॥ ૧ ॥

ઓ ધી શ્રી અરનાથજિનેંદ્ર ! અગ્ર અક્ષર અક્ષર । સર્વોપદ્ર ।

ઓ ધી શ્રી અરનાથજિનેંદ્ર અગ્ર વિંદિ વિંદિ । ટઃ ટઃ ।

ઓ ધી શ્રી અરનાથજિનેંદ્ર ! અગ્રમાય તપિદત્તો યપ યપ । યપદ્ર ।

ભીલા હંધ ।

સરદ રિતુકે દંદુરેં સિત, સીર્થે ચન્દ્રવ નીરદી ।

ઘરિ ઝૂગ મણિમય ધાર દેવે, નેસેં ત્રિવિધા પીરદી ॥

અરનાથ દુસ્તર દ્વાનિ અરિ, વસુ મોહ નિરમેદ્ધ મયે ।

સત દંદ્ર આય ચઢાદ કીનોં, જખું પુલકિત અંગ યે ॥ ૧ ॥

ઓ ધી શ્રી અરનાથજિનેંદ્રાય જન્મપ્રપૂષિનાજનાય જલં નિર્વયામીતિ રચાદા ।

ઘનસાર અગર મિલાય કુંકુમ, ઘસત પરિમલ દિગ મેદે ।

चँचरीक दाब्द करेत आवैं, पूजि जिन भवतप जहै ॥ अरनाथ० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशाय चंद्रनं निर्बेगमर्षिति स्वाहा ।

सितसालि ससितें खंड नाहीं, सरल दीरघ आनहीं ।

करि पुंज जिनहर चरन आँगें, लहै अविचल धानहीं ॥ अरनाथ० ॥

ओ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अष्टपदमण्डपे अथवात् निर्बेगमर्षिति स्वाहा ।

शुभ कुसुम चारु अपार परिमल, कल्पतरुके पावने ।

चखि ब्राणहारी भलं धारी, समरबाण नपावने ॥ अरनाथ० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कायवर्णविभूषनाय दुर्यं निर्बेगमर्षिति स्वाहा ।

बरखंड घृत पकवान सुंदर, स्पर्ण भाजनमें भरे ।

अति मिष्ट रसना भावने जिन पूजि रोग लुधा हरै ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोषविनाशनाथ नंदघं निर्बेगमर्षिति स्वाहा ।

मणि दीप जोति लघोत अदभुत च्वांत नासन भान ही ।

धरि कनकभाजन पूजि जिनपर लहै केवलज्ञान ही ॥ अरनाथ ० ॥

ओं हीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षांशकाविनाशनाथ दीपं निर्वाणमीति स्वाहा ।

वनमार अगर दसांग धूप सु सुर्न धूपायनि भैरें ।

जिनचरण आगें खेय भविजन दुष्ट कर्म सबे जैरें ॥ अरनाथ ० ॥७॥

ओं हीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वाणमीति स्वाहा ।

वादास श्रीकुरु दाख खांरिक आदि फल बहु मिष्ट ही ।

भरि कनकधाल जिनान्न धारें लहै सिव फल सुष्ट ही ॥ अरनाथ ० ॥

ओं हीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षकरूपप्राप्तये फलं निर्वाणमीति स्वाहा ।

वर नीर गंध सुगंध तंदुल पुष्प चरु अरु दीपही ।

करि अर्घ धूप फलाघं लेकरि “रामचंद, अनूप ही ॥

अरनाथ दुस्तर हानि अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये ।

सत इंद्र आय उछाह कीर्नो जजुं पुलकित अंगये ॥ ९ ॥

ओं हीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वाणमीति स्वाहा ।

## अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

कामुण सुदि त्रितिषा चये, अपराजितते हंद ।

उदर सुमित्रा अवतरे, जजुं देव गुण वुंद ॥ १ ॥

श्री श्री कामुणः कलकलीषां गर्भमंगलमिहाय श्री प्रानाथजिनेन्द्राय भर्ष नि० ।

अगहन चउदमि सुकल ही, जनमे जुत त्रप ज्ञान ।

हरि सनपन कर गिरि जजे, जजहुं जनम कल्यान ॥ २ ॥

श्री श्री मार्गदीर्घचतुर्दश। मन्ममंगलमिहाय श्री प्रानाथजिनेन्द्राय भर्ष निर्रिषा०

मगसिर दसमी सुकल ही, पद खंड राज महान ।

तुणवत तजि तप वन धरयो, जजुं चरण धरि च्यान ॥ ३ ॥

श्री श्री मार्गदीर्घचम्या। चषोमंगलमिहाय श्री प्रानाथजिनेन्द्राय भर्ष नि० ।

कार्तिक द्वादसि सुकल ही, धातिकर्म दानि ज्ञान ।



लह्यो धर्मं तुविधा कर्ह्यो, जजहं ज्ञानकल्याण ॥ ४ ॥

ओं श्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां क्षान्तमंगलमर्दिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

त्रेज अमावस सिव गये, सर्व कर्म हानि देव ।

चतुर निकाय सुरा जजे, मे जजहं वसु भव ॥ ५ ॥

ओं श्रीं धनकुण्डापाश्रयां मोक्षमंगलमर्दिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अर जिनके पद कमल जुग, बंदू मीस नवाय ।

देहु सुमति विजती रचूं, पढ़े पाप नासि जाय ॥ १ ॥

( चाल—धंद्रप्रष्ट जिनःपाश्र्वयौजी )

अर अराति वसुहानिके, सिवतिथके पाति थाय । मुख अनंत ता संग लहै  
बंदू गुण मन लाय, बुधहो, अर जिन ध्यावो भावसौजी ॥ २ ॥

विहरि सपेदा चलगये, आयुरही हकमास । जोगनिरोधि अघातिघा,  
 हानि लीनो पिववास । बुधदो, अरजिन ध्यावो भावस्यौजी ॥ १५ ॥  
 अविनासी सुखपय तहां, ज्ञानरूप निरवाध । लखैकालभवकीसवै,  
 परणति बोध अगाध, बुधदो अर जिन ध्यावो भावस्यौजी ॥ १६ ॥  
 तुम करुणानिधि जगपति, जगनायक भगवान । रामचंद्र दिनतीकरै  
 द्यौं मुझ अविचल ज्ञान । बुधदो, अरजिन ध्यावो भावस्यौजी ।  
 ध्यावत निवपदवी लहै, नरपदकीकदावात । भूख द्योप सुरपति चले,  
 देखो फल अवदात, बुधदो अर जिन ध्यावो भावस्यौजी ॥ १८ ॥

पद्याक्षर ।

अर जिन गुण मारं, विबुध अपारं गावत अहनिसि मन धरई ।  
 तसु कीरनेदेवा, खगनुपयेवा, ठानत उत्सव बहु करई ॥ १९ ॥

ओं ह्रीं ध्यां अरनाथजिनेन्द्राय नमः । निर्वाणमीति स्मारा ॥

रति श्रीमज्जिमसूत्रा समाप्ता ॥ १८ ॥

# अथ श्रीमल्लिनाश्रजिनमृजा ।

अथि ।

मलि मनाह मजि सील मरन दुसतर हरयो ।

अनुपेक्षा सर संधि मोहभट जय करयो ॥

प्रज्या शिवका साजि वरगन सित्र वरी ।

आह्वानविधि करुं प्रणमि गुण द्विष धरी ॥ १ ॥

ओ दी धर्मल्लिनाश्रजिनेन्द्र । अथ अथसर अथसर । सर्वोपद्र ।

ओ दी धर्मल्लिनाश्रजिनेन्द्र । अथ लिष्ट निष्ट । दः दः ।

ओ दी धर्मल्लिनाश्रजिनेन्द्र । अथ मय सकिदिने भय मय । पयद्र ।

भारतय ध्व ।

हंदु कुंद छीरत्त अपार सत्रेन वारही ।

मिश्र गंध भृंग धारिके निकारि धारही ॥

अनेक गीत नरप तूर ठानिये विनोदस्यो ।

अनर्घ द्रव्य त्याग मछिनाथ पूजि मोदस्यो ॥ १ ॥

ओ दी र्धर्मप्रतिनाथविनेन्द्राय नमःपशुविनायनाथ जलं निर्धामीति स्मृता ।

गंध चंदनादि ले भवादि दाहकं हरे ।

सरद है सनेह उत्तम बूंद एक जो परे ॥ अनेक ॥ २ ॥

ओ दी श्रीमच्छिनाथविनेन्द्राय संसारबाधविनायनाथ चंद्रनं निर्धामीति स्मृता ।

राप भोगयके मनोगय तंदुलीय सारही ।

सरल चित्तदार रतेत पुंज भव्य धारही ॥ अनेक ॥

ओ दी श्रीमच्छिनाथविनेन्द्राय प्रबुधपरमप्राप्तये प्रबुधान् निर्धामीति स्मृता ।

सुरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण त्याहये ।

जिनेंद्र अप धार्मिकें मनोजकं नसाहये ॥ अनेक ॥ ३ ॥

ओ दी श्रीमच्छिनाथविनेन्द्राय कामराष्ट्रविघ्नंमनाय पुष्पं निर्धामीति स्मृता ।

मोदकादि धेवरादि पृत खंडते करें ।

स्वर्न थाल धारतं लुब्धादि रोगकं हरे ॥ अनेक० ॥ ५ ॥  
 ओं श्री श्रीपञ्चिनायजिनेन्द्राय ध्यातांगविनायनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप तेज भान हेम थालमं भरे ।  
 जिनेन्द्र अग्र धारि भव्य मोह ध्यातकं हरे ॥ अनेक० ॥ ६ ॥

ओं श्री श्रीपञ्चिनायजिनेन्द्राय मोहांधकारविनायनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दसांग धूप चंदनादि स्वर्न पात्रमं भरे ।  
 हुतास संग धारि कर्म ओष भव्यके जरे ॥ अनेक० ॥ ७ ॥

ओं श्री श्रीपञ्चिनायजिनेन्द्राय ऋग्भर्गदरनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्ट सुष्ट श्रीफलादि घ्राण चविलकं हरे ।  
 मनोरथ चित्तहार पूज जोर्य थालमं भरे ॥ अनेक० ॥ ८ ॥

ओं श्री श्रीपञ्चिनायजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतं पशु दंकोरे ।  
 तंदुल शक्षितं स्वेत कुसुम परिमल विरतारै ॥

१६५

तुषा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै ।

घूष दहै वसु कर्म मोख गग फल परकासै ॥

हम अर्घ करै सुभ द्रव्य ले, रामचंद कन बाल भरि ॥

श्रीमालिनाथके चरण जुग, वसु विधि अरबै भाव धरि ॥ १ ॥

ओ श्री श्रीपङ्गिनाथजिनेंद्राय अनर्घभद्रप्राप्तये नमः निर्वाणामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दीप्त ।

वैत सुकल प्रतिपद चये, अपराजितते हंद ।

प्रजावती तर अवतरे, जजुं मल्लि गुणवृंद ॥ १ ॥

ओ श्री चंपद्रुणलप्रतिभद्रायां गर्भपंगलपंदिताय श्रीपङ्गिनाथजिनेंद्राय नमः निर्वाणामीति ॥

अगहन सुदि एकादसी, सुरपति चतुरनिकाय ।

सुरगिरि सनपन करि जजे, भै जजहुं गुणगाय ॥ २ ॥

ओ श्री पार्श्वसुखलैकादश्यां जनपदपंगलपंदिताय श्रीपङ्गिनाथजिनेंद्राय नमः निर्वाणामीति ॥

भवभय करि तृणवत तज्यो, जगतराज धरधीर ।

सित अगहन एकादशी, जज्जुं धरयो तप वीर ॥ ३ ॥

ओं दीर्घगुणैकादश्यां तपोमण्डलमंदिताय श्रीमद्भिनाथजिनेन्द्राय श्रवं निर्वयामीति ० ।

पौष कृत्स्न दोषज हने, धानिकर्म दुखदाय ।

केवल ले वृष भाखियो, जज्जुं ज्ञान गुणगाय ॥ ४ ॥

ओं दीर्घगुणैकद्वितीयायां धानमण्डलमंदिताय श्रीमद्भिनाथजिनेन्द्राय श्रवं निर्वयामीति ० ।

फागुण पंचमि सुकलही, दोष कर्म हनि मोख ।

गये समेदाचल धकी, सिवहित पद गुण घोख ॥ ५ ॥

ओं दीर्घगुणैकतृतीययां मोक्षमण्डलमंदिताय श्रीमद्भिनाथजिनेन्द्राय श्रवं निर्वयामीति ० ॥

अथ जयमाला ।

घोष ।

बालपने मलिनाथजी, विषय अरनि दुखकार ।

प्रगट भरम तप अनित्त, कैरे नमूं पद सार ॥ १ ॥

जय तीन जगतपति भस्त्रिदेव । भव उदधितार तुम सरन पव ॥  
 जय धर्मतीर्थ करता जिनैस । जगनंहु विना कारन महेस ॥ २ ॥  
 जय तीर्थराज किरपानिधान । जय मुकरमा-भरता सुजान ॥  
 जय स्वयंभुद संभू महान । जय ज्ञानवाक्षि करि विश्व जान ॥ ३ ॥  
 जय स्वपर हितु मदमोह सूर । दिक्षा कृपाण गहि तुरत चूर ॥  
 जय तेरह चारित अमल धार । हत राग द्वेष वय अनि कुमार ॥ ४ ॥  
 तुम ज्ञानपोत लहि भवि अनेक । भवसिंहु नरे संसप न एक ॥  
 तुम वचनामृत तीरथ महान । हे पावन जे करि हैं समान ॥ ५ ॥  
 दुःकर्म पंक छिन वा रहाय । तुम वेन भेष करिके जिनाय ॥  
 तुम ज्ञान भान करिके महेस । हे तिमर मोदको छय असेस ॥ ६ ॥  
 सिवपंथ मलय निर्विघ्न जाय । तेरी सहाय निर्वाण पाय ॥



बहु जोगीस्वर तुम सरन धाय । निर्वाँन गए जासी जघाय ॥ ७ ॥  
 जय दर्शन ज्ञान चरित हँस । धर्मोपदेस-दाता महीस ॥  
 जय भक्त्यनिकर तारन जिहाज । भक्तिसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज ॥ ८ ॥  
 रवं नाम मंत्र जो चित धरेय । सर्वार्थासिधि सिवसौरूप लेय ॥  
 में विनऊं त्रिविधा जोरि दाय । मुझ देहु अछैपद मलिननाथ ॥ ९ ॥

प्रसा भद्र ।

श्रीमल्लि जिनेस्वर नमत सुरेस्वर, वसुविधि करि जुग पद चरचै ॥  
 दुह जर मरणावलि नसै भवावलि, रामचंद सिततिय परचै ॥ १० ॥  
 ओ हरि श्रीमल्लिनाथजिनैदाप पूर्णोषे निर्वाणमीति स्वाहा ॥

इति श्रीमल्लिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १९ ॥

# અથ શ્રીમુનિમુન્નતનાયજિનપૂજા ।

અરિષ્ટ ।

સકલ પરીસે જીતિ આન અસિતે દેને,

પાતિ વતુક લહિ જ્ઞાન મલ્લ યોધે ધને ।

મુનિમુન્નત જિન પાપ નમ્ સિર નાપકે,

આહ્વાનન વિધિ કરું ત્રણ લગ્ન ત્રણ પર્કે ॥ ૧ ॥

ઓ મી મેઘનિમુન્નતગિરેદ્ર ! દ્રવ્ય મયલ અવલ । સંશેષદ્ ।

ઓ ક્ષી યાદનિમુન્નતગિરેદ્ર ! મય વિઠ લિપ્ત । યઃકઃ ।

ઓ મી આદનિમુન્નતગિરેદ્ર મય મય મનિનિદિશે મ । મય । વપદ્ ।

ચાલ ઝોયોતસા ।

દંડુ સાદ રિતુદા અંગતે સિન, મુનિ ચિત્ર સપ અવિકારી ।  
સીત મુગેષ તુદ પાસત નાસે, તીર્થોદક મરિ સ્નારી ॥

मुनिमुवत जिनके पद पूजे, दोष दुगुणनव नासे ।

लोक सकल कर रेख ज्यों देखे, ऐसी ज्ञान प्रकासे ॥ १ ॥

ओं श्री श्रीमुनिमुवतजिनेंद्राय जन्ममृद्युनिनाथनाथ जलं निर्वाणामीति स्वाहा ।

वासि मलियागर कुंकुमके रंग कुरनागर घनसारं ।

दाढनिकंदन परिमल्लतें आलि, धावत वृंद अपारं ॥ मुनिमुवत ० ॥

ओं श्री श्रीमुनिमुवतजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाथ चंदनं निर्वाणामीति स्वाहा ।

चंद किरन सम उज्जल दीरघ, मनरंजन अनियारे ।

तंदुल औष अखंडित लेकरि, पुंज करों द्विग द्वारे ॥ मुनिमुवत ० ॥

ओं श्री श्रीमुनिमुवतजिनेंद्राय षण्णपदप्राप्तये अक्षयान् निर्वाणामीति स्वाहा ।

कुसुम मनोहर पंच वरण ही, सुरतरुके सुभ त्पावें ।

गंध सुगंधे प्राणहि रंजन, गुंजन पटपट आवें ॥ मुनिमुवत ० ॥

ओं श्री श्रीमुनिमुवतजिनेंद्राय कामप्राणविहंसनाथ पुष्पं निर्वाणामीति स्वाहा ।

मोदक गूजा धेवर फेनी, सुरही घृत वनावें ।

नगन दिगंबर वन वसे, जज्जं चरण जुत राग ॥ ६ ॥

ओं ही वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंदिनाय श्रीमुनिमुवतर्जनेन्द्राय अयं निर्वेगामीति० ।  
नोर्मा यदि वैमात्रही, हने घाति दुखदाय ।

कदर्थो धर्म केवलि भये, जज्जं चरण गुनगाय ॥ ४ ॥

ओं ही वैशाखकृष्णनवम्यां मानमंगलमंदिनाय श्रीमुनिमुवतर्जनेन्द्राय अयं नि० ।

फागुण द्वादसि कृस्नही, हनि अघाति निरवाण ।

गये सुरासुर पद जजे, जज हं मोक्षकल्याण ॥ ५ ॥

ओं ही कार्तिककृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंदिनाय श्रीमुनिमुवतर्जनेन्द्राय अयं निर्वे० ॥

अथ जयमाला ।

श्लो० ।

श्रीमुनिमुवत जिनतने, नमू जुगल पद सार ।

भवदधि तारनतरनही, पतित उधारनहार ॥ १ ॥

चाल-सीधंभजित्पंदित्पं जगसारहो ।

मुनिमुवून जिनवंदित्पं जगमारहो; नगर कुमागरभूष ।  
पिता नमूं मुहमित्तर्जो जगमारहो, श्रीधरिवंस अनूप ॥

अनूप श्रावण बीजकारी मुरग प्राणतर्ते नये ।

तव मात रयामा गर्भ आपे लोकत्रयर्मे सुख भये ॥

मुर अमुरके नय मुकट कंथे पीठ सब हरि आपही ।

गर्भाकल्पान मदंत महिमा टानि मंगल गावही ॥ १ ॥

पटनवमास त्रिकाली जगसारहो, वरपे रतन अपार ।

बदि दसमी वैसाखकी जगसारहो, जिनजनर्मे तिहवार ॥

तिहवार धंटा आदि बाजे, सबे मुर मिलि आपही ।

जिन लेय पांडुक वन नह्वाये, खीर जल मुभल्पावही ॥

सिंगार करि पितु मात सोंपे, नृप तांडव हरि करयो ।

लखि ल्हदे हरपित भये दंपति, नाम मुनिमुवून धरयो ॥ २ ॥

स्याम वरण तन तुंग है, जगमारहो, वीस धनुष परिमान ।  
 तीस सहस्र धुप आयु है जगमारहो, कछल्यछिनसुभजान ॥  
 सुभराजपद दससहस्र कीनो त्यागि तुणवत वन गये ।  
 नमः सिद्धेभ्यः कहि लोच कीनो, प्यानमें प्रभु धिर धये ॥  
 तबही भयो मनज्ञान सुरनर पूजि पद गुण गाहये ।  
 वैसाख दसमी कृष्ण चंपकवृक्षतलि व्रत भाहये ॥ ३ ॥  
 करि पष्टम मिथुला गोपे जगसार हो, भोजन हित जिनराय ।  
 विश्वसेनवृजी दयो जगसार हो, पप लखि सुर हरपाय ॥

हरपाय सुर आश्चर्य कीनो पंचागिरि वन जाय ही ।  
 तप करे गपारा वरप दादस भांति निरभै थाप ही ॥  
 वैसाख नवमी कृष्ण हरिये पाति चउ धरि प्यान ही ।  
 लहि ज्ञान लोक अलोक पेरुयो, भयो बोध कल्पान ही ॥ ४ ॥

समोसरन धनपति रच्यो जगसार हो, मानसथंभनिसाल ।  
चउ चउ गोपुर सोदने जगसार हो, खाई सजल मराल ॥

मराल वन वन कल्पतरु फुनि चेत वंपक अंवही ।

धुज सेंल सरित सतूष सुर तिय नचै हलत नितेंव ही ॥

मधि सभा द्वादस सभागंडप कमल आसन जिन टये ।

चतु वक्त्र अंगुल च्यारि अंतर भई धुनि मुनि दरपये ॥ ५ ॥

तरु अलोक त्रिय छत्र है, जगमार हो, चवसठि चवर डुरंत ।

जो जन बानी मागधी जगसारहो दुहुभि मधुर घुरंत ॥

घुरंत दुंदभि मुमन वरपै तुंग आसन त्रिय लसै ।

तमपटल भागंडल विध्वंसै कोटिरविक्री छवि नसै ॥

वसु प्रातिहारिज सहित आरिज देसके भवि बोधि ही ।

संभेदगिरि समभाव प्रणये भूरि जोग निरोधिही ॥ ६ ॥

फागुण द्वादसि कुन्तही जगभारहो, ध्यान सुकल आसि धार ।  
 हनि अघाति सित्रपुर लपो जगसारहो सुख अनंत भंडार ॥  
 भंडार सुख आविकार अवपु सु दीनवृद्ध नही कदा ।  
 त्रैलोक्यी तिरकाल परणति ज्ञान गर्भत है सदा ॥  
 तित जनप मरन जरा न न्यपै नाहि सेवक भूषही ।  
 चिद्रूप वसुगुणमयी राजै सदा एक सरूप ही ॥ ७ ॥

तुम गुण सु गुरु वरनवै जगसार हो, जिह्वा सहस वनाय ।  
 तोऊ पार लहै नहीं जगसार हो, तो हम पै किम पाय ॥  
 किम थाप हमपै तुहे वरनन देवगुरु से थकि रहे ।  
 हो कृपानाय अनाथके पति रहै भव दुख में सहे ॥  
 तुम तरण तारण दुखनिवारण तारि भवतें नाथजी ।  
 “चंदराम,” सरानि निहारि आपो जोरिकें जुग द्वापजी ॥



શ્રેષ્ઠા ।

શ્રી મુનિસુવ્રત દેવકી, વિનતી પરમ રસાલ ।

જો પઢસી મુનિસી સદા, પાસી મોક્ષ વિસાલ ॥ ૧ ॥

ઓ શ્રી બીણનિપુણનાથભિર્નમ્રાય પૂર્ણાર્થે નિર્ભયામીતિ શ્યામા ।

શ્રી બીણનિપુણનાથ જિનાનુજા સમાપ્ત ॥ ૨૦ ॥

અથ શ્રીનામિનાથ જિનપુજા ।

આદિત્ર ।

સુફલ ધ્યાન પર જાલિ મસ્મ કરિ ઘાતિ હી,

કેવલજ્ઞાન ઉપાય ધર્મ ફરિ રૂપાતિ હી ।

મુનિ પ્રતિબુધ મધિ મયે નમું નધિ પાપ હી,

આહ્વાનન વિધિ કરું તિવટ હત આપહી ॥ ૧ ॥

ઓ શ્રી ધ્યાનધિનાથજિર્નમ્ર ! અન્ન અવધર અપધર । સંતોષ્ટ ।

ओं ऐं ह्रीं नमिनाथभिर्नेत्र । मय लिख लिख । ठः ठः ।

ओं ऐं श्रीनमिनाथभिर्नेत्र । मय म । सविहिमो म । मय । वरद ।

गीताञ्जलि ।

सरति गंगा हिमन परवत यकी पुरव घावही ।

भरत सनमुख होय नभते परी कुंदमे आव ही ॥

सो नीर निरमल अतिहि सीतल त्रिपानासन लेय ही ।

नमिनाथ जिनके चरण पूजे अपल गुणगण येय ही ॥ १ ॥

ओं ऐं श्रीनमिनाथभिर्नेत्राय नमः सप्तपुत्रिनायनाय नमः निर्वाणाय नमः ।

उद्यान निरजन मांदि पन्नग, घाम दुखते अति भमे ।

लखि मलयचंदन दाह कंदन, तासये सुखते रमे ॥

सो दार प्रासुक नीरते घासि, कनक भाजन लेय ही ॥ नमिनाथ ० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथभिर्नेत्राय संसारनाथविनायनाथ चंदन निर्वाणाय नमः ।

सरद हंदु समान उज्जल गंधते मधुकर भमे ।

सरल दीरघ नांहि खंडित, जोति मुक्ताकी दमौ ॥

मो अचिंत जलनै क्षालि भवि नन, उभै करमै लेय ही ॥ नमिनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीं नमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ नमिनाथमीति स्वाहा ॥

कनक मणिमय सुषर धारिये, पंचवरन मुद्रावने ।

जायनि आदि अनेक विधिही, अमर तरुके पावने ॥

सो कुसुम अद्भुत बाणहारी, लगे मधु कुं भेय ही ॥ नमि० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीं नमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ नमिनाथमीति स्वाहा ।

वंड घृत पकवान सुंदर, सद्य अनुपम मोहने ।

अति मिष्ट रसना हरे देखत, लुधा डायन कुं हने ॥

मो सुष्ट मोदक चारु फेनी, स्वर्ण भाजन लेय ही ॥ नमि० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीं नमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ नमिनाथमीति स्वाहा ।

दीप मणिमय जोति सुंदर, धूमवर्जित ललित ही ।

तम मोह पटल विलाप ऐसे, पवना ज्यों धन चलत ही ॥

ओं ऐ श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! मय लिपि लिप्य । ठः ठः ।  
ओं ऐ श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अथ म म लघिदिनो भव मर । वषट् ।

श्रीवाङ्मंद ।

सरति गंगा हिमन परवत परकी पुरव भावही ।

भरत सनमुख होय नभते परी कुंडमें आव ही ॥

सो नीर निरमल अतिहि सीतल त्रिषानासन लेय ही ।

नमिनाथ जिनके चरण पूजें अमल गुणगण धेय ही ॥ १ ॥

ओं ऐ श्रीनमिनाथजिनेंद्राय नमःपुष्पविनायनाय नमः निर्धाममीति स्वाहा ।

उद्यान निरजन मांदि पन्नग, घाम दुखते अति भर्मे ।

लासि मलयवंदन दाह कंदन, तासयै सुखते रमे ॥

सो दाठ प्रासुक नीरते घासि, कनक भाजन लेय ही ॥ नमिनाथ ० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय संसारबाधविनाशनाथ वंदनं निर्धरामीति स्वाहा ॥

सरद हंटु समान उज्जल गंधते मधुकर भमे ।

सरल दीरघ नांहि खंडित, जोति मुक्ताकी दमें ॥

सो अखित जलते क्षालि भवि मेन, उभै करमें लेय ही ॥ नमिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ अक्षयपद्माक्षे नमः ॥ निर्धामीति स्वाहा ॥

कनक मणिमय सुधर धरिये, पंचवरन सुहावने ।

जावनि आदि अनेक विधिही, अमर तरुके पावने ॥

सो कुसुम अद्भुत बाणहारी, लगे मधु कुं पेय ही ॥ नमि० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ अक्षयपद्माक्षे नमः ॥ निर्धामीति स्वाहा ।

खंड द्रुत पकवान सुंदर, सद्य अनुपम मोदने ।

अति मिष्ट रसना हरै देखत, लुधा टायन कुं हर्ने ॥

सो सुष्ट मोदक चारु फेरी, स्वर्ण भाजन लेय ही ॥ नमि० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय नमः ॥ अक्षयपद्माक्षे नमः ॥ निर्धामीति स्वाहा ।

दीप मणिमय जोति सुंदर, धूमवर्जित ललित ही ।

तम मोह पटल विलाय ऐसे, पवना ज्यौ घन चलत ही ॥

सो कनक भाजन धारि भविजन, चषिसङ्कं अति प्रेयही ॥ नमि० ॥

श्रीं दी धात्रिनाथभिर्नेत्राय मोक्षकारिनायनाथ दीपे निर्णयार्थि स्वाहा ।

सुभग पूष दसांग चूतन, स्वर्ण पूषायन भरे ।

तसु सुरभिर्ते मधु भर्मे अतिही, दसो दिसिर्मे रच करे ॥

सो द्रव्य भविजन लेहि उत्तम, अगानिके संग स्वेय ही । नमि० ॥ ७ ॥

श्रीं दी धात्रिनाथभिर्नेत्राय अष्टमन्दलाय धूपं धिर्वयार्थि स्वाहा ।

बादास श्रीफल चारु पुंगी, आदि सुभ रलियावने ।

तसु गपर्ते द्वे प्राण रंजन, लखे चविस्त्र सुहावने ॥

कनयाल फलते भरो उत्तम, अपर तरुके लेय ही ॥ नमि० ॥ ८ ॥

श्रीं दी धात्रिनाथभिर्नेत्राय साष्टकस्त्रक्षये कलं निर्णयार्थि स्वाहा ।

त्रिमल नीर मुगंध चंदन, अलित स्वेन उजासही ।

वर कुसुम चरुते लुषा नोमे, दीपेत्त तप नासही ॥

‘रामचंद’ दप अर्घ्य कीजे, पूष फल सुभ लेय ही ।

नामिनाथ जिनके चरण पूजुं, अमल गुणगण धेय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनामिनाथजिनेन्द्राय भजनार्पणमस्तु अर्थ निर्वाणमीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

अपराजिततैं हरि चये, विपुला उर अवतार ।

दोयज स्याम असोजही, लयो नजुं भवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं आदिवनकण्ठद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनामिनाथजिनेन्द्राय अर्थ निर्वाण ।

दसमी असित असाढही, जनम सुराधिप जान ।

सुर गिरि ले सनपन जने, जजहुं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं बापाढकण्ठदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनामिनाथजिनेन्द्राय अर्थ निर्वाण ।

वदि अपाढ़ दसमी तज्यो, जगतराज्य तप धार ।

सुधिर भए निज ध्यानमें, जजुं चरण जुग सार ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अपाढकण्ठदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनामिनाथजिनेन्द्राय अर्थ निर्वाण ।

मगासिर सुदि एकदसी, हने घातिया कर्म ।

कह्यो धर्म केवलि भये, जजूं चरण नाजि भर्म ॥ ४ ॥

ओं ही नार्ण्यीर्धगुरैसादरणं प्राभंगलर्धं दवाय श्रीनामनाथजिनेन्द्राय नमः निर्दोषी०  
चतुरदसी वैसाख वदि, हानि अघानि सिवधान ।

गये समेदावल थकी, जजहुं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

मो श्री वैद्याखणचतुर्दश मोक्षमंगलमहिनाय श्रीनथिनाथजिनेन्द्राय नमः नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

हंद नमत मणि मुकटकी, नेक न दुति दरसाय ।

नामि जिन नखमंदलथकी, त्रिविध नमूं निनपाय ॥ १ ॥

पद्यारि दंड ।

जय नामि जिनवरके जुगल पाय । प्रणमू मनवचनन सीसनाय ।

अपराजित नाम विमान सार । चप आपे मिथलापुर मझार ॥ २ ॥



विजयारथ तात हृष्याक वंस । विपुला देवी उर सहस्र अंस ।

अस्वनि कुवार दोयज असेत । जिन गर्भ लयां हरि धारि हंत ॥ ३ ॥

आये कल्पाण गरभादि काज । करि उत्सव चाले देवराज ।

धनपति करि हें तिरकाल चिष्ट । पटधाम आदि नव रत्न सुष्ट ॥ ४ ॥

जय जिन जनमं नय ज्ञान धार । आपाढ कृष्ण दगमां महार ।

आये सब चतुरनिकाय देव । जेजनि न वाहन निज नारि एव ॥ ५ ॥

तव सची जाय परशूनि धान । नणि गुप्त लये जिन तेज भान ।

हरि नमसकार करि गोद लेय । मित्र छत्र तीन हें मग देय ॥ ६ ॥

फुनि सनतकृणार माहिंद हंद । निज चवर करें सोभा अमंद ।

सुरगिरि पांढक वनभांदि जाय । अभिषेक कच्यो जल खीर लाया ॥  
सधि पोंछि करें सिंगार सार । बहु तूर वज्रें निन को न पार ।

बसु विधि पूजा करि निरति टानि । संतोष पातपितादि आन ॥ ८ ॥

तनेहस धनुष पणदह तंग । दस सहस वरपकी आधु चंग ।

करि राजसज्ज्यो भय भोक्त होय । भवभोग विनस्तर काय जोय ॥ ९ ॥

तत्रही लौकिक आप देव । संवोधि चले अतिठानि एव ।

સાધર્મ આદિ સુર સ્વરૂપ । સિવકા લેવાલે વન અનૂપ ॥ ૧૦ ॥

तत्तु वक्रुल तल्ले शिरकेस दारि । तजि उषधि सुधातमध्या नधारि ।

अ।पाद कुण्ठ दसमी महान । इंद्रादि चले करि तप कल्यान ॥ ११ ॥

करि षष्ठम नगरी सुजाग मांदि । अन काज गणे नृपदल लबांदि ।

पय दान दिवो सुर भक्ति देख । आश्रय करे एण विधि विसेख ॥ १२ ॥

नव भास महातप उग्र टानि । धरि श्यान सुकल चडधानि ।

अगाहन सित चउपि सुज्ञान भान । उपज्यो सु अमु कल्यान ठान

समवादिं सहित करिक विहार । समेद ठये बहु भव्यतार ।

वस।ख कृष्ण चोदासि मन्नारि । सिववधू चरी सु अघाति जारि ॥१४॥

नव चतुरनिकायक देव आय । वसु भेव पूजि बहु पुनि उगाय ।  
 करि उत्तमव भंगल मोच्छ ठान । निज ध्यान गये करिके कल्याण ॥  
 जय गदा असल गुण सहित धार । जे लोक बोधदर्पण मझार ॥  
 दर्मेन सब जुगपत लखत भूष । बल अनंत काल भुव एकरूप ॥ ६ ॥  
 गृहमंत देस सुच्छग अपार । गुण अगुरलषू हल को न भार ॥  
 तन चर्म बरू अवगाह हीन । नहि आयय अट्यावाध चीन ॥ १७ ॥  
 गुण अष्ट हहे निहधे अनंत । को बर्नि नके भुगिणिहि संत ॥  
 भं विनवूं श्रीनिभिनाथ देव । मुझ देहु भदा तुम चरण भेव ॥ १८ ॥  
 हां कृपानाथ जगपति जगीस । तुम तारन तरन निहारि हंस ।  
 भं मरनि गही मुझ तारि नाथ । “चंद रम” नभे धरि सीस हाथा ॥ १९ ॥

पद्या ।

दृढ नभि गुणमाला, परमरसाला, मन वध तन कंठे धरहे ।

हुय सिद्ध निरंजन, भव दुख भंजन, अगणिन सुख सिव भंग करई ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नैर्व्यायीति स्वाहा ॥

१॥ श्रीनामिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ ५१ ॥

## अथ श्रीनेमिनाथाजिनपूजा ।

अर्चित ।

घण्टे जंतु रव करवौ नेमि सुनि गिरि गये,

तजि रजमति भव अनिति पेशि मुनिवर भये ।

ध्यान लखन गहि हने कर्म संख तिय वरी,

आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अन्न अस्तर अवनर । सर्वोपद्र ।

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र अथ विष्ट विष्ट । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अथ पाद स्रष्टिस्तो मव पत्र । ५५८ ।

निर्भन्त त्वाप मर्तार्थोदक, कनक रत्नमप्य भरि द्वारा ।

धनवचनन मुभ करि जिनपद पूजे, नमो जन्म मृति दुखकारि ॥  
श्रीनेमि जिनदरक पद वन्द, रजमति सी नतछिन छागै ।

पशुवनिर्वा रय मुनिके करुणा धरि, जाय चहे प्रभु गिरनारी ॥१॥

आ री श्रीनेमि नार्थान्नेदय कन्धपुष्पुचिनायनाय नमो निर्धरार्थानि रचादा ।

पुभ कुंकुम त्वापि अमार भित्तिवै, भेदनते पनसार घमे ।

नसु परपि र्भार नले अति नान्त, मदा दाह ततकार नसे । श्रीनेमि०

आ री श्रीनेमि नार्थान्नेदय कन्धपुष्पुचिनायनाय नमो निर्धरार्थानि रचादा ।

मुभ गालि अर्थाङ्गन मोरमि भंडिन, गमि मम उज्जल अनियारे ।

भुवनक मोभर मुक्तापी दुलित, पुंन करे भवि मनहार ॥ श्रीनेमि० ॥

आ री श्रीनेमि नार्थान्नेदय कन्धपुष्पुचिनायनाय नमो निर्धरार्थानि रचादा ।

कुसुम मनोहर प्राणनके हर, पंचवरन अति सुखकारी ।

सुर तहके पावन चखि ललचावन, अति महुतें भाँवे भरि थारी। श्रीनेमि

ओं ह्रीं श्रीं नैमिनाथजिनेन्द्राय स्वाध्यायविद्महाय नमः सर्वपापवि स्वाहा ।

अति मिष्ट मनोहर वेवर फ़ैनी, मोदक भूझा भरि थारी ।

रसनाके रंजन रसने धूरे, हुधा निवारन चल सारी ॥ श्रीनेमि० ॥

ओं ह्रीं श्रीं नैमिनाथजिनेन्द्राय स्वाध्यायविद्महाय नैवेद्यं निर्वाणाय स्वाहा ॥

दीप रतनमय जोत मनोहर, कनक रकावोंमें धरें ।

तम मोहनसै जिम पवनयकी घन, स्वपर लखै गुण विस्तारें ॥ श्रीनेमि०

ओं ह्रीं श्रीं नैमिनाथजिनेन्द्राय स्वाध्यायविद्महाय दीपं निर्वाणाय स्वाहा ।

सुम धूप दसाग हुतासनके संग, लै घूपायण माँहि भरें ।

तसु सौरभतें मधु गुंजत आवैं, अष्टकर्म ततकाल जरें ॥ श्रीनेमि० ॥

ओं ह्रीं श्रीं नैमिनाथजिनेन्द्राय स्वाध्यायविद्महाय पूषं निर्वाणाय स्वाहा ॥

पूगी दाख वदाम हृदारा, एला श्रीफल जुत ल्यावैं ।



जगं दोष निराकृत धर्मं घोष । भयतारक संभव करन मोख ।

जय मोहन मूरति मिष्ट पाल । पितु मात पद्म रवि प्रातकाल ॥ ५ ॥

बहु नृत्य ठानि पितु मातु देय । जय वृद्ध भये गिन राज हेय ।

मिन श्रावण पृथी जंतु पेखि । भयभीत भये भवतें विसेखि ॥ ६ ॥

तप धारि तज्यो परिगह पिसाच । नुनि सिद्धोंको करि दयाग दाच ।

गहि ध्यान खडग चउपाति मार । लहि केवल मित्र प्रतिपद कुआर । ७ ।

धन देव रज्यो सभवादिमार । जिन अंतरीक करिकें विहार ।

वन ग्राम नगर पुर सर्वदेस । कहि धर्म भव्य तारे मेहेस ॥ ८ ॥

भवकृत इहै अथको भँडार । तिसमें दुख है सुख ना लगार ।

तुम तारण विरद निहारि देव । मैं सरन गद्दी मुञ्जितारिदेव ॥ ९ ॥

दिन सप्तमि सित आपाढ मोखि । जिन प्रकृति पिचासी सेप सोखि ।

गिरनारि सिखर निर्वाण यान । चंदराम नये निति धारि ध्यान ॥ १० ॥





मम मोह निविड विध्वंस कारण, लेय जिनगृह आयही ॥ श्रीपादर्वे०

मो दी भीषारर्वेनाथनिर्देनाय मोहांधकारविनाशनाथ दीपं निर्वधामांति रत्नादा ।

श्रीखंड अगर दसांग धूप, सु कनक धूपायानि भरे ।

आमोर्देने अलिखुंद आवे, गुंजते मनहुं हरे ।

वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण, अग्निनसंग जराय ही ॥ श्रीप । ३६० ॥

ओं ह्रीं श्रीपारर्वेनाथनिर्देनाय अष्टकर्मदरनाथ धूपं निर्वधामीति रत्नादा ।

अनि पिष्ट पक्क मनोगय पावन, चक्षिस्त्र माणनहुं हरे ।

अलि गुंज करत सुगंध सेती, सुधाकी सरभरि करे ॥

सो फल मनोहर अमरतरुके, स्वर्णधाल भराय ही ॥ श्रीपादर्वे० ॥

ओं ह्रीं श्रीपारर्वेनाथनिर्देनाय अष्टकर्मदरनाथे फलं निर्वधामीति रत्नादा ।

सलिल सुच्छ सु अगर चंदन अछित उज्जल लगायही ।

वर कुसुम चरते लुधा नासे, दीप ज्वांत नसायही ॥

करि अर्घ धूप मनोगय फल ले, “राप” शिवसुख दापही ।

श्रीपादर्वनाथ जिनेन्द्र पूजं, हिरे हरप उपाय ही ॥ १ ॥

को री श्रीपादर्वनाथ जिनेन्द्राय अर्थे निर्वन्धनीति रचयिता ।

अथ पुन कृत्याणक ।

येहा ।

प्राणान्तर्य भक्ती नयं, वाया उर अवतार ।

दोअ अभित येमाथ ही, लयो जजुं पद सार ॥ १ ॥

को री वेलापट्ठज्जिनीयाया नमंभणकभट्टिनाय श्रीपादर्वनाथ जिनेन्द्राय अर्थे नि० ।

पोह करन एकादमी, तीन ज्ञानजुन देव ।

जनमं हरि मुर गिरि जजं, मं जजहं करि भेव ॥ २ ॥

को री पोवट्ठायणाया जन्मभणकभट्टिनाय श्रीपादर्वनाथ जिनेन्द्राय अर्थे नि० ॥

इद्धर तप सुकुमार वप, काशी देस विहाय ।

पांठ करन एकादसी, परपो जजुं गुण गाय ॥ ३ ॥

को री पोवट्ठायणाया जन्मभणकभट्टिनाय श्रीपादर्वनाथ जिनेन्द्राय अर्थे निर्वन्धनीति० ।

कृत्स्न चोषि सुभ वैतकी, हने घाति लहि ज्ञान ।

कह्यो धर्म दुविधा मुदा, जजुं चोष भगवान् ॥ ४ ॥

ओं श्री वैवस्वतचतुर्थो ध्यानपङ्कटिनाथ श्रीपार्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ॥

ससामि श्रावण सुकल ही, सेष कर्म हनि वीर ।

अविचल सिवधानक लघो, जजुं चरण धर घीर ॥ ५ ॥

ओं ही श्रावणद्व्युद्यमनां पौष्पपङ्कटिनाथ श्रीपार्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ।

अथ जयमाला ।

दीष्ट ।

पार्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल जुगसार ।

प्रचुर भवार्णव तुम हरथो, मुझ तारो भव तार ॥ १ ॥

बाल-वै साधु मेरे दर बसो मेसी राहु पावक पीर ।

श्री पार्वनाथ जिनेन्द्र, वंदु, सुद्ध मन वच काय ।

घनि पिता आसासेनजो; घनि धन्य वामा माय ॥

પનિ જનમ કાઢી દેતમે ધાનારણી મુખ પ્રાપ ।

મમુ પાસ થો મુદ્ધ દાસકર્મી મુનિ અરજ અવિચલ ઠામ ॥ ૧ ॥

અતિદાપ મનોદર મજલ જલદ સમાન સુંદર કાપ ।

મુખ દેશિર્વેકે તલચાપ લોચન નેક નૃપતિ ન ધાપ ॥

પદકમલનલદુતિકવલ ચપલા કાંદરવિ હવિ સ્વામ । પ્રમુગાસ ॥ ૨ ॥

હૈ અપોમુખ પંચાનિ તપતો વમટકો ચર ફર ।

તિન અગનિ અરતે નાગ વોધે દેવ વન વૃષ પૂર ॥

વે મેધે દે પરોદ્ગ પદમા અવનન્નિક રિધિ ધાન ॥ પ્રમુગાસ ॥ ૩ ॥

દમ ડરમ મરત નિદારિકે સવ અધિર સરન ન જોય ।

સંસાર પો મૂમ જાલ દે જિમ ચપલ ચપલા દોય ॥

દું પુઃ મંતન સામતો નિવ તદું તર્જિકે ધાન । પ્રમુગાસ ॥ ૪ ॥

દમ ચિતવતા લોકાંતકે સુર આપ પૂજે પાપ ।

परणाम करि संघोषि चाले चितवते गुण ध्याय ॥

धानि धन्य वष सुकुमारमें तप धर्यो अतिबल धाम ॥ प्रभुपास० ॥ ५ ॥

बंदु समै जिन धरी दिख्य विहारि अदिछिति जाय ।

तित ठये वनमें दुष्ट वो सुर कमठको चर आय ॥

अतिरूप भीषण धारिके फुंकार पन्नग रूपाम । प्रभु पास० ॥ ६ ॥

हे तुंग वारण सिंध गरज्यो उपलज बरसाय ।

करि अगनि बरषा मेघ मूल तडित परलय बाय ॥

प्रभु भीर वीर अरुंधत निरभय असुरको बल खाम । प्रभु पास० ॥ ७ ॥

बाही समै धर्येद्रको नय मुकुट कंठ्यो पीठ ।

हरि आय सिंधान रन्यो फणमंड कीनो हँठ ॥

तब असुरकरनी भई निरफल अवल जिन जिन धाम ॥ प्रभु पास ॥ ८ ॥

धरि ध्यान जोग निरोधिके चउपाति कर्म उपाहि ।

तहि दान केवलते नराचर लोक सकल निशारि ॥

ममवादि भूनि कुचेर कीनी कहे किम बुधि खाम । प्रभु पास० ॥ ९ ॥  
हरि करी नुति कर जोरि विनती धन्य दिन रह वार ।

धनि धनी या प्रभु पासजी हम लहे भवकी पार ॥

धनि धन्य वानी सुनी मं अघनामनी पुनि धाम ॥ प्रभु पास० ॥ १० ॥  
वसु कर्म नासि विनामि वपु भिवनयारि पार्ह वीर ।

वसु द्रव्यते यह धान पूजे टरे सबही पीर ॥

सां अचल हे समेदपं गग भावहे वसु जाम । प्रभुपास ॥ ११ ॥

कर जोरि के ” चंदराग, मां अहो धानि तुम देव ।

भवि बांधि के भवासिपुनारे तरन तारन देव ॥

मं नभस हुं गो तारि अवही ढील चर्यो तुम काम । प्रभु पास० ॥ १२ ॥

निति पढे जे नरनारि सवही हरे तिनकी पीर ।

सु लो क लहि न र होय चम्पी काम हलधर वीर ॥

कुनि सर्व कर्म जु पाति कै लहि गोख सखसुख घाम ।

प्रभु पास द्यौ सुख दास की सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

ओ ॥ श्रीगार्हपत्यजिनेन्द्राय पूज्यार्थे निर्दोषमीनि नमः ॥

इति श्रीगार्हपत्यजिनपूज्य समाप्ता ॥ २३ ॥

अथ श्रीमहावीरजिनपूजा ।

वसि ।

द्यौ सुद परकासक हर प्रभु भान ही ।

लोक अलोक-महारि और नहीं आन ही ॥

प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाप ही ।

आह्वानन विधि करूं विमलगुण श्राप ही ॥ १ ॥

ओ ॥ श्रीगार्हपत्यजिनेन्द्र । इय अथन अकवर । धर्मोपदे ।





वति पूज करन गभ्ये पदमे, उभै ररथं लेयही ॥ श्रीवीर० ॥ ३ ॥

अं ११। य परार्था निवेद्याप अत्र पदपादये प्रथमत्वं निर्वासीति स्वार्था ।

मंदार मेरु सुषारि नरुके, सुमन मंघासक ही ।

मधुघृद अर्धे भविनके, चसि लसै दीप पविच ही ॥

गो ममरवाण विभंम कारन, कुमुप उरुकर लेय ही । श्रीवीर० ॥

अं १२। य परार्था निवेद्याप कायवाणविभसनाय दुष्य निर्वासीति स्वार्था ।

पदमा निवास मरोज आश्रित, सुधार्की आमोदस्यो ।

चिन मुषा भु नरो नृगनि हे रवे मधुकर मोदस्यो ॥

भो दी रयेयु म उभ्या विभंमन, चारु चरु कर लेयही ॥ श्रीवीर० ॥ ५ ॥

अं १३। य मंद र्वाश्रितेनाय सुधार्का निवासनाय चैवेयं निर्वासीति स्वार्था ।

त्रेलां यपमदि जिनेद्र मदिमा, नेजर्वे दरसाय ही ।

याप नम दिगदमो निवह सु, मूलवे नसि जाय ही ॥

મો દીપ ધણિગય લેજ મારફત, કનક માજન લેય દી । શ્રીવીર० ॥

એ દી બ્રહ્મદર્શી લેવેન્દ્રાપ મોક્ષલક્ષ્મીનાગનાય દીપે નિર્ભયામીતિ સ્વાદા ।

પુણ મંદા દુઃખાપ ગોને, મુખ મુન દિગોને હવે ।

દિવપાત્ર નિને ધનો છિન્ન ધન, નોલપે આપે ઢંદે ॥

મો માત્રપ પરિમલ મંદા રંજન, મુનિને નો અનિ પ્રેયત્રી । શ્રીવીર० ॥

એ દી બ્રેષ્ઠદર્શી લેવેન્દ્રાપ, મુન મોદકનાપ મુન નિર્ભયામીતિ સ્વાદા ।

મુખ ક ટારકર વધા મુખ, મન્યમે મન્યું દેરે ।

આપોંધ પાવન પુંમ વગરું, મનોવાંછિત ફલ કરે ॥

મરિ પાત્ર વળામય અમાર નેરકે, લયે ચાચિયું પ્રેયત્રી । શ્રીવીર० ॥

આ દી અપારધી લેવેન્દ્રાપ માધવમ્માણ્યે કંઠે નિરભયામીતિ સ્વાદા ।

વીર મંપ દ્વરયાદિ દ્રવ્યલે, કમલપદ સનમાતિ તને ।

જો જમે અપાર્થ એંદિ મતેવં, ટાનિ ઉત્તમય અતિ ધને ॥

સુર દીપ અમી કામ દલપર, તીર્થ પદવો શ્રેયત્રી ।

सुख "रामचंद्र" लहंत भिवके, अर्घ करि प्रभु एनेपदी ॥ ९ ॥

ओ हो श्रीपादवीजिनेद्राय नमर्नमप्रामये अर्न निर्वणामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

पछां सुकल अपादही, उणोचरतें देव ।

चप त्रिमला तर अवतरे, जजुं भक्ति धरि एव ॥ २ ॥

ओ हो पद्मागुणपदपां गर्भमंगलमंदिताय श्रीपादवीजिनेद्राय अर्घ नि० ॥

चैन सुकल तेरसि सुरां, कीनों जन्म कल्याण ।

छीर उदधितें मेरुपे, भे जजुं हुं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओ हो त्रैपुणलत्रोदरपां अनमंगलमंदिताय श्रीपादवीजिनेद्राय अर्घ नि० ॥

अगहन दमयी कुरुनदी, तप पारचो वन जाय ।

सुरनरपति पूजा करी, भे जजुं हुं गुण नाय ॥ ३ ॥

ओ हो श्रीपादपदपां तपोपंगलमंदिताय श्रीपादवीजिनेद्राय अर्घ निर्वणामीति० ।



जप कुंडलपुर जिन जन्मधान । हरिवंस ण्यौगमाधि सुष्ठु भान ॥

जप कनक वरान करससकपाय । हरि चिह्न यहचर वरस आय ॥ ३ ॥

जप हंद्र कस्यो अति वीर सूर । सुनि देव चल्पो ह्ये सर्पभूर ॥

पुनार जहाल विकराल देख । कीदृत कुमार भाजे विशेष ॥ ४ ॥

प्रभु पीर मदा पंनग अज्ञान । करि कीदृ हरयो मदको वितान ।

हे गगन देव नय पूजि पाय । परसंसि कस्यो महावीर राय ॥ ५ ॥

लसि पूरव भव अनुप्रेक्ष विंश । भयभीत भये भवते अरयंत ॥

लोकान आप धुति पूजि पाय । निज धान गये सूर असुर आय ॥ ६ ॥

रवि मिथका करि उत्सव अपार । वन जाय धरे प्रभु ताजे सिंगार ॥

नुनि सिद्ध लोच कंच नगन पाय । धरि पष्टम लप चिद्रूप लाय ॥ ७ ॥

तप दादस दादस रप ठानि । चउधाति दने गहि खड्ग प्यान ॥

जप भंस प्रसुष्टप लज्ज देव । वसु भातिदार्प अजिते सुपेव ॥ ८ ॥



धर्म अर्थ लहि कामदेवं नरपति पदपावें ।

दृष्टम आदि जिन जजें अर्थकरि जे नरदयावें ॥ ३ ॥

ओं ऐ धीह्यधादिवीरान्तेभ्यो पूष्णिं निर्गामीति स्वाहा ।

अष्टछ ।

दृष्टम आदि चउवीस जिनेस्वर व्यावही ।

अर्थ करें गुण गापर तूर वजावही ॥

ते पावें सिव समं भक्ति सुरपति करें ।

”रामचंद्र, सक नाहि कीर्ति जग विस्तरें ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः ।



इति श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।









